ब्रह्मा बाबा का लास्ट संदेश

वी.सी.डी. नं. 2359, ऑडियो नं. 2845, अव्यक्त वाणी-23.07.17

ओम् शांति! आज की अव्यक्त-वाणी है- 23.07.2017, जो कि पर्सनली चलाई गई। अच्छा है! बाबा तो जानते हैं ना! आप भी जानते हैं कि बाबा क्या कहना चाहते हैं। बाबा किसे कहा जाता है? साकार और निराकार के मेल को 'बाबा' कहा जाता है। ''अशरीरी और शरीरधारी का मिलन है। उनको तुम कहते हो 'बाबा'।'' (मु.ता.9.3.89 पृ.1 मध्य) तो बाबा जानते हैं कि क्या कहना चाहते हैं, आप भी जानते हैं। बाबा का ये संदेश सभी तक पहुँचाना है। सभी तक माने कहाँ तक? पहली बार ब्राह्मणों की दुनिया रची, 'ओम् मंडली' नाम पड़ा; पसंद नहीं आई, डिसमिस कर दी। दूसरी बार ब्राह्मणों की दुनिया रची, उस ब्राह्मणों के संगठन का नाम रखा- 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय'। जिसके नाम पर 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय' नाम रखा, वो नामधारी भी 18 जनवरी, सन् 1969 को ब्राह्मणों की दुनिया से अव्यक्त हो गया। फिर क्या हुआ? जैसे और धर्मपिताएँ आए दुनिया में, तब तक उनके धर्म-संगठन की उन्नति होती रही, वो धर्मपिताएँ चले गए, उनके फॉलोअर्स ने उस धर्म की दुर्गति कर दी। ऐसे ही दादा लेखराज ब्रह्मा के शरीर छोड़ने के बाद दूसरी रची गई ब्राह्मणों की दुनिया में विघटन की शुरुआत हो गई, देहधारी धर्मगुरुओं ने तुरंत उसी साल अपने-2 ज़ोन स्थापन कर लिए, जोनल इन्चार्ज बनके बैठ गए। जो ब्राह्मणों का संगठन मम्मा-बाबा के समय एक केन्द्र, माउंट आबू से संचालित होता था, वो डिवाइड हो गया। जो दुनिया में भी द्वितीय विश्वयुद्ध हुआ था, हीरोशमा-नागासाकी ध्वस्त हो गए; बाबा ने भी बताय दिया था- ''टूट गई है माला, मोती बिखर गए, दो दिन रहकर साथ न जाने किधर गए।'' तो 1942 से लेकर 47 तक पूरा ही पहला संगठन धराशायी हो गया। ऐसे ही दूसरी बार रचा गया ब्राह्मणों का संगठन मूल रूप से 18 जनवरी, सन् 1969 से विघटन होते-2 1976 तक पूरा ही विघटित हो गया। जिसका इशारा भी 10 साल पहले 1966 की मुरली में दे दिया था- 10 साल में पुरानी दुनिया का विनाश, नई दुनिया की स्थापना होगी। लक्ष्मी-नारायण का जन्म होगा। ''10 वर्ष में हम भारत को फिर से सतयुगी, श्रेष्ठाचारी, 100 प्रतिशत पवित्रता-सुख-शांति का दैवी स्वराज्य कैसे स्थापन कर रहे हैं और इस विकारी दुनिया का विनाश कैसे होगा, वो आकर समझो।'' (मु.ता.25.10.66 पृ.1 मध्य) ''इन ल०ना० का जन्म कब हुआ। आज से 10 वर्ष कम 5000 वर्ष हुआ।'' (सन् 66 की वाणी है) (मु०4.3.70 पृ०3 मध्य) तो 1976 में पुरानी ब्राह्मणों की दुनिया का विनाश हुआ और नई ब्राह्मणों की दुनिया जिसे एडवांस ब्राह्मणों की दुनिया कहें, आरंभ हो गई। जैसे शास्त्रों में लिखा है, ब्रह्मा द्वारा तीन बार दुनिया रची गई, तीनों बार पसंद नहीं आई, ध्वस्त कर दी।

ये जो तीसरा एडवांस पार्टी का संगठन उठा, उन अज़ीज़ बच्चों के सामने ही 'तुम बच्चे' कहकर बोल दिया- 40 से 50 वर्ष के अंदर तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे। ''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।'' (मु.ता.6.10.74 पृ.2 अंत) पहली ब्राह्मणों की दुनिया और दूसरी ब्राह्मणों की दुनिया, दोनों के संगठन का आरंभ और अंत 10 और 40 वर्ष के अंदर हुआ। पहला 10 वर्ष में, 1936/37 से लेकर 1947 और दूसरा, 1947 से लेकर 1976 और 1977 को सम्पूर्णता वर्ष कहा। 1976 में बाप का प्रत्यक्षता वर्ष मनाया गया। जिस बाप के द्वारा ब्राह्मणों की वो एडवांस बीज-रूप दुनिया का आरंभ हुआ, जो बीज-रूप ब्राह्मणों का संगठन का सूत्रपात सन् 1936/37 में भी हुआ था। ऐसे ही अभी यहाँ भी 40 वर्ष का समय दिया हुआ है, 1976/77 से लेकर 2017/2018। 40 से 50 वर्ष बोला; इसलिए 10 वर्ष का अंतर है; क्योंकि पूरी राजधानी स्थापन होनी है; परंतु राजा की संपूर्ण राजधानी का फाउंडेशन तो एक के द्वारा ही पड़ता है और ये तो दुनिया की सबसे सशक्त अव्वल नम्बर की राजधानी स्थापन होने जा रही है;

परंतु जिसे एक सत् का सत्संग कहा जाता है, वो सत्व एक ही होता है, जिसे कहते हैं- गॉड इज़ ट्रुथ, ट्रुथ इज़ गॉड और गॉड इज़ वन। जो दुनिया में सच्चा पातशाह कहा जाता है। उस धर्म की मुसलमान लोग तारीफ़ करते हैं - 'अल्लाह अव्वलदीन'। अल्लाह ने आकर अव्वल नम्बर दीन अर्थात् धर्म की स्थापना की। तो साबित हो जाता है कि एक के द्वारा ही राजधानी का फाउंडेशन डालने का अभियान शुरू होता है और जो राजा की धारणाशक्ति रूपी राजधानी तैयार होने जा रही है, उस मनुष्य-सृष्टि रूपी वृक्ष का रूप तो छोटा ही होगा, जैसे बीज छोटा होता है; परंतु राजधानी में तो सब तरह के चाहिए ना- (1)राजा भी चाहिए, (2)रानी भी चाहिए, (3)राज्याधिकारी भी चाहिए, राज-परिवार के (4-5)भांती भी चाहिए, (6)दास-(7)दासी भी चाहिए, (8)चांडाल भी चाहिए, तब ही तो संपन्न राजधानी कही जाती है।

जब है ही सच्चा पातशाह। जिसका जन्म भी बताय दिया सन् 1976 से लेकर 1977 में सम्पूर्णता वर्ष। मन-बुद्धि के अंदर विश्वास और पक्का निश्चय बैठने की बात है। दुनिया में भी कोई परिवार बनता है तो एक बीज-रूप बाप से ही बनता है। प्रवृत्ति मार्ग का बीज है तो द्विदल होते हैं, दोनों दलों का कनेक्शन एक बिन्दु (शिव बाप) से होता है। तो यहाँ ब्राह्मणों की दुनिया में भी जैसे 1976 में टू लेट का बोर्ड लगा। जिसका एम-ऑब्जेक्ट दिया था- नर से नारायण बनना है और नारी से लक्ष्मी बनना है। बनेंगे तो नम्बरवार; लेकिन अव्वल नम्बर कोई तो होता है जिसको आगे रखा जाता है। जो अव्वल नम्बर है, उसको कहा जाता है 'अलफ़' अर्थात् पुरुषार्थ में खड़ा रहने वाला और जो पुरुषार्थ करते-2 उसी पुरुषार्थी जीवन में नर से डायरैक्ट नारायण नहीं बन पाता, पड़ जाता है, गिर जाता है, तो उसको बताया 'बे'। उर्दू का पहला अक्षर 'अलफ़', खड़ा हुआ डंडा होता है; दूसरा अक्षर 'बे', पड़ा हुआ डंडा होता है। तो नई दुनिया की राजधानी का फाउंडेशन जिस एक के द्वारा लगाया जाता है, उसी के लिए गीता में बोला है- ''नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः।'' (गीता 2/16)- जो सत् होता है, सच्चा होता है, उसका इस दुनिया में अभाव नहीं है, कभी खत्म नहीं होता है। वो मनुष्य-आत्मा ऑलराउण्ड पार्टधारी है। जो शास्त्रों में भी मानी गई है कि 33 करोड़ देवताओं के बीच एक ही व्यक्तित्व शंकर देवता है, जिसे 'आदिदेव' भी कहा जाता है। जिसके माता-पिता का नाम कोई नहीं जानता, जिसकी कभी मृत्यु नहीं होती माना पार्ट की कभी समाप्ति नहीं होती, इस संसार-चक्र में आदि से अंत तक पार्ट बजाता है, एक सेकेण्ड का भी अंतर नहीं पड़ सकता; लेकिन महामृत्यु के समय सभी मनुष्य-आत्माओं को तो अपना-2 शरीर छोड़ कर आत्मलोक में जाना लाज़मी है। तो ब्रह्म वाक्य में बताया, जिस ब्रह्मा का वाक्य ही अटल है, वो दाढ़ी-मूँछ वाला मानवी ब्रह्मा अटल नहीं है, अखंड नहीं है; लेकिन ''ब्रह्मं वाक्यं जनार्दनम्'' कहा जाता है। वो वाक्य अटल हैं। उसी ब्रह्म वाक्य में बोला, जिसे हम 'मुरली' कहते हैं, मुरली वाक्य है कि ''इस सृष्टि पर सदा कायम कोई चीज़ है नहीं, सदा कायम एक शिवबाबा ही है।'' (मु.ता.2.1.75 पृ.3 अंत) शिवबाप भी इस सृष्टि में सदा कायम नहीं; क्योंकि 'शिवबाप' बिन्दी का ही नाम है। जैसे हम आत्माएँ निराकार कहते हैं, हम निराकार बिन्दी आत्माओं का बाप भी बिन्दी, निराकार। ''अणोरणीयांसमनुस्मरेत् यः।'' (गीता 8/9) उसको साकार शरीर होता ही नहीं; इसलिए हम बिन्दु-2 आत्मा रूपी भाई-भाइयों का वो सिर्फ़ बाप है, दूसरा कोई सम्बन्ध नहीं। जिस तन में मुकर्रर रूप से प्रवेश करता है; इसलिए पराया भी नहीं कह सकते। जिसमें अपनत्व पैदा होता है उसी पर आशिक हुआ जाता है और परिवार बनाने के लिए हर पिता आशिक रूप में कोई-न-कोई माता को अपनाता है।

इसलिए शिवबाप भी ब्रह्मा मुख से कहते हैं- मैं जिस तन में भी प्रवेश करता हूँ, उसका नाम 'ब्रह्मा' रखता हूँ। ''अगर दूसरे में आवे तभी भी उनका नाम 'ब्रह्मा' रखना पड़े।'' (मु.ता.17.3.73 पृ.2 अंत) और ब्रह्मा एक नहीं होता है, अनेक नामधारियों के नाम 'ब्रह्मा' हैं। यादगार चित्र भी मिलते हैं, मूर्तियाँ भी मिलती हैं- चतुर्मुखी ब्रह्मा, पंचमुखी ब्रह्मा; परंतु दुनिया में उनकी पूजा नहीं होती, मंदिर नहीं होते, कोई याद भी नहीं करता। अव्वल नम्बर ब्रह्मा के लिए शास्त्रों में

भी गायन है- ''गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरुः साक्षात् परम्ब्रह्म...।'' जो ब्रह्मा यानी बड़ी अम्मा परे-ते-परे है, जिससे परे कोई अम्मा नहीं और वो अम्मा भी ऐसे ही है, जैसे माताओं की आदत होती है- सुनी-सुनाई बातों से भारतवासियों ने दुर्गति पाई। ''सुनी-सुनाई बातों पर ही भारतवासियों ने दुर्गति को पाया है।'' (मु.ता.30.1.71 पृ.4 आदि) क्यों? क्योंकि खास मातृदेश भारत की माताएँ सुनी-सुनाई बातों पर जल्दी विश्वास कर लेती हैं। नहीं तो बाबा ने ब्रह्म वाक्य मुरली में ही बोला है- तुम बच्चों को एक से सुनना है। अनेकों से सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा। ''मेरे से ही सुनो। अगर औरों से भी सुना तो व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा।'' (मु.ता.12.1.74 पृ.2 आदि) शूटिंग पीरियड संगमयुग में व्यभिचारी ज्ञान हो जावेगा, तो 5000 वर्ष के ब्रॉड ड्रामा में भी वो आत्माएँ व्यभिचारी ज्ञान धारण कर लेंगी। जो हिस्ट्री में प्रसिद्ध है कि भारत जो मातृदेश कहा जाता है, जिस माता की गोद से सारी दुनियाँ जन्म लेती है, सारी दुनियाँ ब्रह्मा की औलाद (बनती है)। वो परम्ब्रह्म, वो भी अव्वल ब्रह्मा होने के नाते, भले जहाँ भी जन्म लेता है, उसी जीवन में कन्वर्ट नहीं होता; लेकिन माता में एक बहुत बड़ी कमी होती है, मोह की भारी कमी होती है। जो बोला-माताओं की अगर मोह पर विजय हो जाए, तो समझो पास हो गईं। ''अगर माताएँ नष्टोमोहा हो गईं तो नम्बर आगे ही जाएँगी।'' (अ.वा.5.6.77 पृ.216 अंत) लेकिन नाम ही है 'भारत माता', काम ही है उनका, ये भारत में स्त्री रूप में जन्म लेने वाली माताएँ और उनके प्रभाव में आने वाले बच्चे, ढाई हज़ार वर्ष की हिस्ट्री में टाइम-टू-टाइम जो-2 धर्मपिताएँ आते गए, उनके बरगलावे में आते गए, कन्वर्ट आते गए, उन विधर्मी धर्मपिताओं को अपना सब-कुछ मान लिया। दूसरे धर्म की आत्माएँ, जो डायरैक्ट धर्मपिता के पीछे-2 उतरती हैं, वो कभी भी दूसरे धर्म में कन्वर्ट नहीं होतीं, दूसरे धर्म का धर्मग्रन्थ नहीं छूती हैं, न ही पढ़ती हैं। ये भारत देश ही है, भारतवर्ष के ये भारतवासी ही हैं, जो अपने धर्मपिता को भूल जाते, धर्मग्रन्थ को भूल जाते, अपने धर्म के मर्म को भूल जाते। जो गीता में लिखा है-''स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।'' (3/35) यही कारण है कि कलियुग के आखिरी जन्मों में, आखिरी शतक में, पूरे विधर्मियों/विदेशियों के आधीन हो जाते हैं। आधीनता से छूटते भी हैं, तो आधीनता के इतने आदी हो जाते हैं कि वो ही विदेशी शिक्षा अपनाते हैं जो विदेशी दे गए, वो ही पहनावा अपनाने लगते, वो ही खान-पान, वो ही रहन-सहन, अपना सब-कुछ भूल जाते। जो विदेशियों ने देन दी है- हमारी सभ्यता देखो कितनी ऊँची है! हमारी बताई हुई पढ़ाई पढ़ो, पढ़ करके नौकर बनो माना दास-दासी बनो और यही बहुत ऊँची बात है! देखा जाए, तो आज भारत के नौजवान, जो ज़हीन माने जाते हैं और उनके माँ-बाप भी, उन बच्चों को भारत की सेवा करने के लिए नहीं उकसाते, विदेश में नौकरी करने के लिए भेज देते हैं और भारतीय सर्वोच्च धर्मग्रन्थ, जिसमें लिखा है- ''स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः।'' (गीता 3/35)- अपनी ज्योतिबिन्दु आत्मा के धर्म यानी याद में रहते हुए, संघर्ष करते हुए, शरीर से मर जाना भी अच्छा है। इस बात को गलत साबित करते हैं। जो महाराष्ट्र में खास शिवाजी का नारा था-''देहं वा पातयामि कार्यं वा साधयामि।'' कौन-सा कार्य? जो सारी मनुष्य-सृष्टि के बाप का कार्य है- श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ धर्म और श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ राज्य की स्थापना (करना), जो कभी कोई के आधीन न हो, ऐसी स्थापना करनी है; लेकिन ऐसा लक्ष्य लेने वाले पाँच पाण्डव संसार रूपी जंगल में लोप हो गए। बहुत प्रयास करने पर कलियुग के अंत में अगर कहीं मिलते भी हैं, जो शास्त्रों में गायन है कि पाण्डवों ने लम्बे समय तक वनवास लिया और वो वनवास का समय कहाँ बिताया? काम्पिल्य नगर में। जो कपिल मुनि की बसाई हुई नगरी है। कपिल मुनि सांख्य शास्त्र के प्रणेता माने गए हैं। जिस सांख्य का अर्थ है-सह+आख्या अर्थात् विस्तृत व्याख्या के साथ जो बात समझाई जाए, उसका नाम है-सांख्य और गीता में कहा है-''सांख्ययोगौ पृथक् बालाः प्रवदन्ति न पण्डिताः।'' (5/4) सांख्य और योग- ये अलग-2 नहीं हैं। जो सांख्य है वही योग है; इसलिए भारतीय परम्परा में गाँव-2 में, शहर-2 में, देश/विदेश में जो शिवालय हैं और जो भी खुदाइयाँ हुई हैं, उनमें जो लिंगमूर्तियाँ संसार का सार रूप में मिली हैं, उसको समझने के लिए ज्ञान का विस्तार चाहिए ना! उसे ही सांख्य कहा जाता है अर्थात् कोई बात की गहराई तक जाना, अच्छे से समझना, जो

दूसरों को भी समझाई जा सके, कोई कितना भी प्रश्न-उत्तर करे, ऐसे कितने भी रावण के सर निकलते रहें, राम के बाण मार-2 करे सभी सरों का अंत तक खण्डन करता रहे, जब तक कि 16 हज़ार नसें-नाड़ियाँ, जिनमें आधी शुद्ध खून बहाने वालीं और आधी अशुद्ध खून/काला खून बहाने वाली नाड़ियाँ होती हैं, वो सभी नाड़ियों का मेल नाभि में हो जाए और उसी नाभिकुण्ड में ऐसा बाण लगे जो रावण का क्रियाकर्म हो जाए। 16 हज़ार नसें-नाड़ियाँ कौन हैं बेहद ज्ञान की भाषा में? आधी रुद्रमाला, आधी विजयमाला। विजयमाला है शुद्ध संकल्पों का खून बहाने वाली और रुद्रमाला है अशुद्ध संकल्पों का/काला खून बहाने वाली। खून माने आत्मा की संकल्प शक्ति।

संकल्प शक्ति का ऑरिजिन तो एक ही आत्मा से होता है या दो आत्माओं से होता है? (किसी ने कहा-दो आत्माओं से) संकल्प शक्ति 100 परसेण्ट शुद्ध रूप में कहें, तो उसका ऑरिजिन करने वाली एक ही आत्मा त्रिकालदर्शी शिव है, जो आत्माओं का बाप ज्योतिबिन्दु निराकार है, जिससे निराकारी ज्ञान का अखूट भण्डार का वर्सा मिलता है; लेकिन निराकारी ज्ञान जिसे हम थ्योरी कहते हैं, उस थ्योरी को प्रैक्टिकल जीवन में उतारने वाला 500 करोड़ मनुष्य-आत्माओं में सुप्रीम सोल बाप का कोई बड़ा बच्चा भी होगा, जो मानवीय सृष्टि-वृक्ष का पिता कहा जाता है। सभी धर्मपिताएँ उसे मानते तो हैं- ऐडम, आदम, आदिदेव, आदिनाथ; लेकिन जानते नहीं हैं। उसकी जीवन-कहानी को सब भूले हुए हैं। अपनी-2 जीवन-कहानी जानते हैं, उनके फॉलोअर्स भी जानते हैं; लेकिन जो अनादि व्यक्तित्व है, उसकी जीवन-कहानी को सब भूले हुए हैं। जो ब्रह्म वाक्यों में बार-2 बताई गई कि एक ही शिवबाबा है, जिसकी जीवन-कहानी हीरे तुल्य है, वर्थ पाउण्ड जन्म भी कहें, हीरे जैसा जन्म; परन्तु वो हीरा जो सोमनाथ के मंदिर में पत्थर के रूप में जड़ा हुआ था, वो पत्थर बुद्धि शिव सुप्रीम सोल नहीं है। कोई मनुष्य-आत्मा संग के रंग में आकर ऐसी पत्थर बुद्धि बनती है, जो मूल रूप में माता का पार्ट बजाती है- 'भारत माता'। जिसके दो निराकार सो साकार कम्बाइंड रूप हैं- एक निराकारी ज्योतिबिन्दु, मनन-चिंतन-मंथन करने वाली चैतन्य आत्मा; एक पाँच तत्वों का संघात साकार चोला, प्रकृति रूपिणी माता। इसके दो व्यक्त रूप हैं- एक सात्विक रूप लक्ष्मी के रूप में, दूसरा तामसी रूप भी बनता है जो सिर्फ़ भारत माता नहीं कही जाती, जगत माता कही जाती है- जगदम्बा। दोनों का मेल 'महालक्ष्मी' कहा जाता है; परंतु दोनों ही साकार रूप में स्वयं मनन-चिंतन-मंथन करने वाली चैतन्य शक्तियाँ नहीं हैं; इसलिए पानी की गंगाएँ हैं। पानी का मंथन करने से कोई सार नहीं निकलता है। वो पानी की गंगा भी पंच तत्वों का संघात है, जिसको गीता में भी दो रूपों में कहा है- एक जड़ प्रकृति, एक परा प्रकृति। तो जड़त्वमयी प्रकृति, जो जगत्पिता के संसर्ग-संपर्क-संबंध में लम्बे समय तक रहने के बावजूद भी बाप को भूल जाती है और चैतन्य प्रकृति, जो लम्बे समय तक शारीरिक रूप से, इन्द्रियों के मेल से बाप के साथ नहीं भी रह पाती, तो भी भूलती नहीं है, एक में ही स्मृतिलब्धा के पुरुषार्थ में रहती है मन-बुद्धि से और पंच तत्वों के शरीर से भी कभी किसी के प्रभाव में नहीं आती है, कभी किसी की प्रभावित होने वाली प्रजा नहीं बनती है; परन्तु नाम तो है ही प्रकृति रूपी माता। 'प्र' माने प्रकृष्ट रूपेण, 'कृति' माने रचना। चाहे लक्ष्मी हो, वो भी रचना है, चाहे जगदम्बा हो, वो भी रचना है; परन्तु दोनों के स्वभाव-संस्कारों के मेल का जो संपन्न रूप है, उसको 'महालक्ष्मी' कहा जाता है। जिस महालक्ष्मी का पूजन स्पेशल दिन होता है (किसी ने कहा- दीपावली पर) अवली माने कतार। जब ज्ञान की रोशनी देने वाले 108 आत्मा रूपी दीपकों की अवली/माला तैयार हो जाती है, तब पूरी राजधानी स्थापन हो जाती है।

जिस राजधानी की स्थापना के लिए डायरैक्ट बाप के सन्मुख बैठने वाले तुम बच्चों को बताया है। सन्मुख का भी अर्थ दो प्रकार से है- एक अंत तक की संपन्न स्टेज में बाहर से सन्मुख देखने में आते हैं और अंदर से भी सन्मुख हैं और ऐसे भी बहुत हैं, जो बाहर से तो सबको सन्मुख देखने में आते हैं; लेकिन अंदर से बाप के प्रति भयंकर विरोधी संकल्प चलते हैं; अंदर से एक और बाहर से दूसरे अंत तक भी संपन्न सूर्यवंशी राजधानी में जुड़ नहीं पाते।

ऐसे, राजाओं की धारणाशक्ति रूपी राजधानी जब द्वापर में या कलियुग में तैयार होती है, तो दूसरे-2 धर्मपिताओं से सुनने लग पड़ते हैं। भले सतयुग-त्रेतायुग में भारत में जन्म लेते हैं; परन्तु पूरे 84 जन्म नहीं लेते हैं, बाद-2 में आते हैं; लेकिन विधर्मियों और विदेशियों में कन्वर्ट होकर सारे संसार में फैल जाते हैं। पक्के भारतीयों का संगठन थोड़ा रह जाता और बाद में आने वाले विदेशियों-विधर्मियों का संगठन ढेर-का-ढेर हो जाता है। पता ही नहीं चलता- कौन स्वदेशी हैं/स्वधर्मी हैं, कौन विदेशी हैं। सोमनाथ मंदिर में जिस साकार सो निराकार के मेल की यादगार 'शिवलिंग' दिखाई गई, वो मनुष्य-सृष्टि की बीज परब्रह्म सो प्रजापिता स्वयं ही विदेशियों से प्रभावित हो जाता है। यहाँ तक कि वो रथ इतना प्रभावित हो जाता है जो सीढ़ी के चित्र में नीचे दिखाया गया कि पेट की रोटी, तन के कपड़ों और मकान के लिए भी विदेशियों के आधीन हो जाता।

मूल रूप में जानेंगे तो 500-700 करोड़ का पिता जगत्पिता है। जैसे परिवार में बच्चे कहाँ से जन्म लेते हैं? (किसी ने कहा-माँ से) माँ से लेते हैं! माँ में कहाँ से आते हैं? बाप से आते हैं ना! जैसे बाप प्रवृत्तिमार्गीय बीज-रूप में, साकार माता प्रकृति लिंग-रूप में और निराकार ज्योतिबिन्दु आत्मा का मेल होता है। ऐसे ही ये मनुष्य-सृष्टि का जो एक बीज बाप है, जो शिव के मंदिरों में यादगार रूप में दिखाया जाता है, जिसका गहरा अर्थ दुनिया में कोई नहीं जानते- न भारतवासी जानते हैं, न विदेशी जानते हैं, न विधर्मी जानते हैं। क्यों? क्योंकि बाप का परिचय बाप के सिवाय कोई दे ही नहीं सकता। ''वह सतगुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं।'' (मु.ता.27.9.84 पृ.2 मध्य) और वो बाप सिर्फ साकार होता है या निराकार? संपन्न रूप साकार और संपन्न रूप निराकार। संपन्न रूप निराकार का मतलब है 'सत्धामवासी'। जो बाप शिव का विरुद है कि मैं इस पतित सृष्टि में, पतित तन में आता हूँ तो तुम बच्चों को नम्बरवार आप समान बनाके जाता हूँ। ''तुम बच्चों को आप समान बनाकर साथ ले जाते हैं।'' (मु.ता.10.9.73 पृ.3 मध्य) जो मनुष्य-आत्मा सुप्रीम सोल शिव बाप समान अव्वल नम्बर बनता है, बीज-रूप स्टेज में निरंतर का अभ्यासी, जो समय का कोई अंतर न पड़े- ऐसा बीज-रूप का अभ्यासी, जिसकी यादगार है- 'हीरा'। जो आख़रीन पत्थर-बुद्धि बन जाता है। किस बात में पत्थर-बुद्धि बन जाता है? कोई प्रूफ और प्रमाण होना चाहिए, जो शिव बाप कहते हैं- ''बिना प्रूफ (Proof) और प्रमाण के बुद्धिमान लोग मानने के लिए तैयार नहीं होते।'' (अ.वा.28.4.74 पृ.34 अंत) वो क्या प्रूफ है कि मनुष्य-सृष्टि की बीज-रूप आत्मा/सार-रूप आत्मा, वो भी पत्थर-बुद्धि बन जाती है, पत्थर समान बन जाती है। जैसे मुरली में ब्रह्म वाक्य बोला-साकार और निराकार के मेल में से शिव को हटा दो, तो शव रह जाएगा। जीवंत या निर्जीव? (सभी ने कहा-निर्जीव)। पत्थर कैसा होता है- जीवंत होता है या निर्जीव होता है? (सभी ने कहा-निर्जीव) उस निर्जीव रथ का आधार शिव बाप लेता है। जन्म-मरण के चक्र से न्यारा होने के कारण त्रिकालदर्शी निराकार बाप, रथ का आधार लेता है या चैतन्य आत्मा का आधार लेता है? रथ का आधार लेता है, रथ को कण्ट्रोल करता है युक्ति से, रथ की इन्द्रियों को कण्ट्रोल करता है; परन्तु आत्मा को स्वतंत्र छोड़ता है- स्वतंत्र रहो और स्वतंत्र रहने दो। आत्मा की स्वयं की इच्छा है तो सुप्रीम फादर शिव की बात माने, इच्छा नहीं है तो न माने। सभी आत्मा रूपी बच्चों के लिए एक नियम अपनाता है या अलग-2 नियम अपनाता है? (सभी ने कहा- एक ही नियम) तो आत्मा रूपी बच्चों में बड़ा कार्य करके दिखाने वाला जो बाप का बड़ा बच्चा है, जिसमें सत् बाप शिव की प्रॉपर्टी सत् का ज्ञान 100 परसेण्ट आ जाता है। तो नियम है कि कोई भी लौकिक बाप के बड़े बच्चे में जो सत्व की शक्ति होती है, जो माता के द्वारा धारण कराई जाती है, धारण करने वाली माता रूपी धरणी अगर सच्ची है, शुद्ध है, तो उसका प्रभाव सती के रूप में भारत में देखा ही जाता है, जिन्हें शिवशक्ति कहा जाता है। जिन शिवशक्तियों के द्वारा नई दुनिया की राजधानी की स्थापना होती है, स्वर्ग के गेट खोले जाते हैं।

ये शक्ति कहाँ से आई? जो हिस्ट्री में भारत की कन्याएँ-माताएँ विदेशियों-विधर्मियों से प्रभावित होती रहीं और जन्म-जन्मांतर, 63 जन्म लगातार कन्वर्ट होती रहीं, उनमें ये शक्ति कहाँ से आ गई? कब से आ गई? शिव बाबा से आ गई सन् 1936 से, सन् 1947 से या सन् 1976/77 से आ गई? अरे! आ गई या नहीं आ गई? (किसी ने कहा- आ गई) आ गई? (किसी ने कहा-आ रही है) आ रही है! अच्छा, आवाहन हो रहा है, विजयमाला का आवाहन हो रहा है! माला माने संगठन। उस संगठन का कोई मुखिया भी होती है, जिसे शहद की मक्खियों की रानी कहते हैं। शहद की रानी को नियंत्रित कर लिया जाए तो रिज़ल्ट क्या आता है? सारी शहद की मक्खियों का झुण्ड रानी के पीछे आ जाता है, देर नहीं लगती है। जैसे रावण की नाभि में, जहाँ 16 हज़ार नाड़ियाँ इकट्ठी होती हैं, एक बाण लगा और रावण धराशायी हो गया। जो बोला-‘‘भारत माता शक्ति अवतार अन्त का यही नारा है।’’ (अ.वा.21.1.69 पृ.24 आदि) तो धक्क से राजधानी स्थापन हो जाती है। जो सुप्रीम सोल बाप का कहना है कि मैं आता हूँ तो धक से तुम्हारी राजधानी स्थापन कर देता हूँ। ‘‘यह तो एक ही धक्क से एकदम स्वर्ग बना देते हैं।’’ (मु.ता.2.1.63 पृ.6 आदि) कि 80 साल लगते हैं? नहीं! अखण्ड पूरी राजधानी स्थापन कर देता हूँ कि अधूरी राजधानी स्थापन कर देता हूँ? अखण्ड संगठन, ऐसा संगठन तुम ब्राह्मणों का बन जावेगा जिसमें एक भी विकारी पाँव भी नहीं रख सकेगा। ऐसी सशक्त दुनिया की राजधानी भारत में स्थापन होती है और सशक्त राजधानी स्थापन हो गई तो क्या रिज़ल्ट होगा? दुनिया के जो देहधारी धर्मगुरुओं के द्वारा स्थापन की हुई धर्म की मान्यताओं वाली यूनिटीज़ है, वो ध्वस्त होने में देर लगेगी, 80 साल लगेंगे या थोड़े में ही नष्ट हो जाएगी? (किसी ने कहा-थोड़े में ही नष्ट हो जाएगी) जो आदि (सभी ने कहा-सो अंत), आदि में भी 10 साल लगे थे, बीज-रूप आत्माओं का संगठन तैयार हुआ था, अंत में भी 10 साल ही हैं; परन्तु वो 10 साल जो बाप के सिकीलधे बच्चे हैं, उनके लिए हैं या विदेशियों-विधर्मियों के लिए हैं? विदेशियों-विधर्मियों के लिए 20 साल हैं। जो मनुष्य-सृष्टि का बीज-रूप बाप और उसके बीज-रूप श्रेष्ठ बच्चे हैं, उनके लिए 100 साल नहीं हैं। ऐसे नहीं समझना है कि सन् 2017/18 में अभी 20 साल पड़े हैं। वो ही बात इस अव्यक्त वाणी में बताई है कि अभी अंत समय है। ये बाप का संदेश 500-700 करोड़ तक पहुँचाना है कि सारी मनुष्य-सृष्टि का जो एक बाप है, वो इस सृष्टि पर प्रत्यक्ष हो चुका है। जिस साकार बाप से साकार मनुष्य-सृष्टि का साकार स्वर्ग का वर्सा मिलता है। धनवान बाप धन का वर्सा देता है, ज़मीनदार बाप ज़मीन का वर्सा देता है। जो स्वर्णिम संगम में सदाकाल स्वस्थिति में स्थित होने वाला बनेगा, पहले स्वयं स्वस्थिति में स्थित हो, तब बच्चों को वर्सा देगा, जो बच्चे साकार में हैं। साकार से साकार वर्सा मिलता है, निराकार से निराकार का अखण्ड वर्सा मिलता है।

तो साकार मनुष्य-सृष्टि के बाप के पुरुषार्थ की सम्पन्न यादगार है- शिवलिंग, जिसमें बड़ा रूप भी है और सूक्ष्म रूप भी है। जो मुरली में ब्रह्मवाक्य बोला है- छोटा रूप याद नहीं आता तो बड़े रूप को ही याद करो। ‘‘भल बिन्दी बुद्धि में याद ही नहीं आती। अच्छा, शिव को तो याद करो तो पाप कटे। बड़े रूप पर हिरे हुए हो, बड़ा ही सही।’’ (रात्रि मु.ता.17.1.69 पृ.1 मध्यांत) 80 साल हो गए, निराकार की याद में एक्स्पर्ट बने या साकार की याद ज़्यादा आती है? साकार की याद स्वतः ही आ जाती है; क्योंकि 63 जन्म साकार का संग किया है तो साकार की याद में एक्स्पर्ट बने हैं। जब संसार के बीज-रूप बच्चे, उनकी ही यह हालत है, जिस बीज में सबसे जास्ती ताकत होती है- जड़ों से भी ज़्यादा, तने से भी ज़्यादा, टहनियों से भी, फलों से भी, फूलों से भी ज़्यादा, बीज में ही तो ताकत होती है। तो बीज-रूप आत्माओं का जब यह हाल है, तो जो 500-700 करोड़ दूसरे धर्म की आत्माएँ हैं, वो महामृत्यु के समय, अंत समय में किसकी याद करेंगी- निराकार को याद करके मुक्ति-जीवनमुक्ति पाएँगी या साकार सो निराकार को याद करेंगी? (किसी ने कहा- साकार को याद करेंगी) इसीलिए रामायण में तुलसीदास ने बोला- ‘‘सगुणहि अगुणहि नहिं कछु भेदा, उभय हरै भव सम्भव खेदा।’’- साकार और निराकार में कोई भेद नहीं है, जो साकार है वो ही निराकार

बनता है। साकार शरीर होता है, रथ होता है। भगवान तो निराकार है। जो निराकार सुप्रीम सोल है, उसको क्या चाहिए? अरे, नई सृष्टि रचने के लिए उसे क्या चाहिए? कुछ चाहिए या निराकारी रूप में फुदुक-2 करके सृष्टि उत्पन्न कर देगा? साकार चाहिए ना! तो उसे रथ चाहिए या निराकार आत्मा चाहिए? (किसी ने कहा-रथ चाहिए) तो जो टोटल निर्जीव पत्थर-बुद्धि रथ बन चुका, एकदम जड़ बन चुका, नाम दे दिया 'जड़ भरत', उस जड़त्व रूप का शिव आधार लेता है। कौन लेता है? परमपुरुष। पुरुष माने आत्मा। कैसा पुरुष? परम, जिससे परे-ते-परे कोई है ही नहीं। उसको नई सृष्टि रचने के लिए आधार चाहिए, माशूका चाहिए। वो आशिक बनता है। आशिक किसके पीछे दौड़ता है? माशूक के पीछे दौड़ता है। जिसके पीछे दौड़ता है उसको ऐड़ी-चोटी की ताकत देने के लिए तैयार रहता है, सारी शक्तियाँ अर्पण करने के लिए तैयार रहता है या कुछ बचाके रखता है? सब-कुछ अर्पण करता है। पहली रचना है- प्र+कृति। 'प्र' माने प्रकृष्ट, 'कृति' माने रचना। उसको कहते हैं- भारत माता।

जो माता है, वो भारत माता सारे संसार की दृष्टि में, मातृप्रधान है। भारत देश क्या है? (सभी ने कहा-मातृप्रधान देश) दुनिया का और कोई देश नहीं है जो मातृप्रधान हो, सब पुरुषप्रधान हैं। वो परमपुरुष शिव, माता को सारी शक्ति अर्पण करता है। माता की भुजाएँ तो हैं ही सहयोगिनी रूपी। वो माता आदि-रूपा है; क्योंकि वो सारी शक्तियाँ प्रकृतिपति से लेती है और सदाकाल के लिए लेती है कि अल्पकाल के लिए लेती है? (किसी ने कहा-सदाकाल के लिए) इसलिए भारत में परम्परा है, पिता वानप्रस्थी बन जाता है, संन्यासी बन जाता है और माता परिवार संभालती है। तो माता, पिता प्रजापिता भी है और माता, परम्ब्रह्म भी है। यही परम्परा दादा लेखराज ब्रह्मा तक आई। पिता का टाइटिल किसको मिला? दादा लेखराज ब्रह्मा को भी मिला। आज भी ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ 'त्वमेव माता च पिता' का साकार प्रैक्टिकल रूप, चैतन्य रूप किसको मानती हैं? (किसी ने कहा- ब्रह्मा बाबा को) तो देखो, ये परंपरा भी कहाँ से शुरू होती है? (किसी ने कहा-ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में) जो पहला ब्राह्मण कहा जाता है सो पहला देवता, पहला देवता सो पहला क्षत्रिय, पहला क्षत्रिय सो पहला वैश्य, वही पहला शूद्र, फिर वही पहला ब्राह्मण; वो ब्राह्मण जब सम्पन्न बनता है तो ब्राह्मण, देवता पूजनीय बनता है।

जो पहला-2 पूजनीय बनता है उसी की यादगार शिवलिंग है। फिर शिवलिंग क्यों कहा जाता है, शंकरलिंग क्यों नहीं? (किसी ने कहा-बड़ा है ना!) बड़ा! अरे शिवलिंग क्यों कहा जाता है, जो ब्रह्मवाक्य बोल दिया मुरली में, मेरे लिंग की ही पूजा होती है। और देवताओं के अन्य इन्द्रियों की पूजा होती है- नेत्र कमल, मुख कमल, हस्त कमल, पाद कमल; परन्तु मेरे लिंग की पूजा होती है। ''मेरी तो सिर्फ आत्मा माना लिंग की ही पूजा होती है। तुम्हारी तो सालिग्रामों के रूप में, फिर देवताओं के रूप में भी पूजा होती है।'' (मु.ता.22.7.67 पृ.3 अंत) शिव निराकार को लिंग है, इन्द्रियाँ हैं? (किसी ने कहा-नहीं) तो किसकी इन्द्रिय की बात है? (किसी ने कहा-साकार रथ की बात है) कौन इन्द्रिय जीते जगतजीत बनता है? योगबल से शिव इन्द्रियों को जीतता है? उसे ज़रूरत है? (सभी ने कहा-नहीं) उसको तो इन्द्रियाँ हैं ही नहीं। तो जो सोमनाथ मंदिर में लिंग दिखाया गया, जिसका दायाँ हिस्सा और बायाँ हिस्सा जड़त्व की यादगार है। जो जड़त्व की यादगार प्रकृति का बीज है, परा प्रकृति भी है और पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, आकाश- इनका संघात रूप जड़ प्रकृति भी है, दोनों का मेल होता है। जो 'महालक्ष्मी' बनती है, वो ही लिंग-रूप है और वो माता है, जो यादगार बनी हुई है- 'त्वमेव माता'। शिव के मंदिर में जाते हैं, हाथ जोड़कर शिवलिंग के सामने कहते हैं- 'त्वमेव माता', तू ही मेरी माता है; क्योंकि माता और पिता के रूप में चितशक्ति आत्मा, जड़त्वमयी शक्ति के रूप में माता, जो प्रकृति-रूपा कही जाती है। सात्विक रूप महागौरी भी है, तामसी रूप महाकाली भी है, दोनों का मेल भी है और एक ही व्यक्तित्व में वो मेल होता है, जिसे परमपदधारी विष्णु कहा जाता है। विष्णु एक आत्मा का मेल या दो आत्मा का मेल? (किसी ने कहा-दो आत्माओं का) नारायण और लक्ष्मी, दोनों का मेल है। कैसा मेल- सात्विक मेल या 100

परसेण्ट तामसी मेल? (किसी ने कहा-सात्विक मेल) आज के स्त्री-पुरुषों का कैसा मेल है? (किसी ने कहा-तामसी) इस सृष्टि पर कोई भी धर्म में ऐसा प्रवृत्ति का रूप दिखाई देता है, जो वायब्रेशन से, दृष्टि से, वाचा से, कर्मेन्द्रियों से आपस में टकराता न हो? कोई है? कोई ढूंढने पर भी देखा जा सकता है? नहीं देखा जा सकता। तो ऐसे प्रवृत्ति मार्ग की स्थापना निराकारी ज्ञान देकर सुप्रीम सोल बाप आकर करते हैं, जिस निराकारी ज्ञान को थ्योरी कहा जाता है। उस निराकारी ज्ञान को/थ्योरी को जो प्रैक्टिकल जीवन में शरीर की इन्द्रियों के द्वारा प्रैक्टिकली धारण करके दिखाता है, वो ही शिवलिंग रूप है। जो गीता में कहा गया- ''अव्यक्तमूर्तिना।'' (9/4) मूर्ति तो है। मूर्त माने साकार या निराकार? (किसी ने कहा- साकार) लेकिन अव्यक्तमूर्त माना साकार होते हुए भी नाक, आँख, कान, हाथ, पाँव दिखाई ही नहीं देते, ऐसी मन-बुद्धि की निरंतर निराकारी स्टेज में टिक जाता है और ऐसी 'साकारी सो निराकारी' स्टेज, जिसमें सभी प्रवृत्तिमार्गीय साकार आत्माओं के स्वभाव-संस्कार का मेल है। कौन-कौन? पार्वती माता कहो और पुरुष, जिसे भक्तों ने 'शंकर' कह दिया। वो शंकर नहीं, जो याद के पुरुषार्थ में बैठा है। वो अधूरा है या संपन्न है? वो तो अधूरा है। जब याद की संपन्न स्टेज पर पहुँचता है, तब ऐसी प्रवृत्ति तैयार होती है और वो प्रवृत्ति के दो रूप हैं- एक ज्ञानी थ्योरीटिकल ज्ञान धारण करने वाला और एक प्रैक्टिकल रूप वैष्णवी शक्ति; लेकिन उसमें शुरुआत में थ्योरी नहीं होती है। लक्ष्मी किससे ज्ञान लेती है? (किसी ने कहा-नारायण से) और नारायण? (किसी ने कहा-शिव से) प्रैक्टिकल में जिसे सत्, गॉड इज़ ट्रुथ कहा जाता है, उस सत् को संसार में विख्यात ही नहीं कर सकता, जब तक सत् को धारण करने वाली धरणी माता की प्रवृत्ति न धारण करे। ये अंधे-लंगड़े की कहानी है। लंगड़ा है, किस बात का लंगड़ा? (किसी ने कहा-अपवित्रता से लंगड़ा) हाँ जी! और अंधा? (किसी ने कहा-अज्ञान से अंधा) दोनों का मेल होता है तो पक्का अर्धनारीश्वर रूप बन जाता है। सतयुग के आदि संगमयुग में वो महाराजा जो पत्थर-बुद्धि था। कौन-सी बात में? ''अमृत छोड़ विख काहे को खावे" (मु.ता.7.11.70 पृ.1 मध्यादि)- इस बात में पत्थर-बुद्धि, विषपायी है। पूरा श्रीमत को फॉलो करने वाला है कि इस एक बात में पत्थर-बुद्धि है? है ना! तो वो पत्थर-बुद्धि पारस-बुद्धि कैसे बने?

दुनिया में जो भी संन्यासी हुए-इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट से लेकर कोई भी धर्मपिताएँ, प्रवृत्ति के पक्के रहे या कच्चे रहे? (सभी ने कहा-कच्चे रहे) कभी प्रवृत्ति को जीवनभर निभाय नहीं सके और शंकर को भी दो रूपों में शास्त्रों में दिखाया गया- निवृत्ति में भी है और प्रवृत्ति में भी है। जब प्रवृत्ति है तो सम्पन्न है। उसको कहते हैं- विष्णु रूप। ब्रह्मा सो विष्णु बनता है। ऐसा विष्णु जिसमें 'नो विष एट ऑल'। विषपायी में विष का नाम-निशान भी नहीं रहता। कौन-सी शक्ति आकर मिल जाती है? दुनिया के सारे काम काहे से होते हैं? (किसी ने कहा-पवित्रता की शक्ति से) वो पवित्रता रूपी सत् को धारण करने वाली भारत में सती कही जाती है। जो सेकिंड क्वालिटी/दो नम्बर की सती मानी जाती है- वृंदा, तुलसी का अवतार, उसमें भी इतनी शक्ति है कि जब तक राक्षस-जलंधर के पक्ष में रही, तब तक भगवान कहा जाने वाला, माना जाने वाला शंकर भी उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सका, उसका पूरा परिवार भी कुछ नहीं बिगाड़ सका और वही वृन्दा सती उसके कण्ट्रोल से बाहर चली गई तो धराशायी हो गया। ये पवित्रता की प्रैक्टिकल शक्ति है। जिसे कहा जाता है- एवरप्योरिटी। हिस्सेदारी हो जाती है, थ्योरी हमारी और प्रैक्टिकल तुम्हारा, दोनों का मेल। ज्ञान की थ्योरी आत्मा में बनती है या शरीर में बनती है? (किसी ने कहा-आत्मा में बनती है) और प्रैक्टिकल? शरीर से होता है। तो प्रकृति रूपी जो माताएँ हैं, जिनको शास्त्रों में दो नाम दिए-दिति और अदिति। दोनों शक्तियाँ हैं। किससे शक्ति लेती रहीं? कश्यप से। 'काश्य' माने योग का तेज, 'प' माने पीने वाला। जो योग का तेज पीने वाला, संसार में 'योगीश्वर' नाम से प्रसिद्ध हुआ, 'योगीराज' के नाम से जाना जाता। चाहे 'कृष्ण' नाम दें, चाहे 'शंकर' नाम दें, चाहे ब्रह्मा का पहला पुत्र 'सनतकुमार' नाम दिया जाए, योगीश्वर एक ही होगा या तीन-2 होंगे? (किसी ने कहा-एक ही है) उस एक ईश्वर, योगीश्वर से सारी जड़-जंगम सृष्टि कोई-न-कोई रूप में, आगे-पीछे योग ज़रूर लगाती है। पहले

जंगम, चैतन्य आत्माएँ। चैतन्य आत्माओं में भी कौन मुखिया है? अरे, चैतन्य प्राणी हैं, उनमें सभी में आत्मा है, उनमें मुखिया कौन? मुख्य जाति कौन-सी है? मनुष्य जाति; क्योंकि मन-बुद्धि वाली है। तो प्राणियों में मनुष्य रूप कही जाती है- मनुष्य जाति, वो ज्ञान को पहले ग्रहण करती है और आत्माओं का बाप क्या देने आता है? (सभी ने कहा- ज्ञान देने आता है) ज्ञान मनुष्य समझेगा या अन्य प्राणी समझेंगे? उनमें मन-बुद्धि वैसी नहीं होती। मनन-चिंतनशील, संकल्प-विकल्प करने वाला मन तो होता ही नहीं। वो तो जड़त्वमयी प्राणी हैं- आवेग आया और कर बैठे; एक सेकेण्ड की भी देर नहीं लगाते। मनुष्य सोचता है, विचारता है, उसे 'मनुष्य' कहा जाता है। मननात् मनुष्य। मनन-चिंतन नहीं करता तो मनुष्य, मनुष्य नहीं है, जानवर से भी बदतर है। जो बाप कहते हैं, भगवान ने किसकी सेना ली? (किसी ने कहा-बंदरों की) श्रीमत क्या है, क्या नहीं है, देहभान का आवेग आया और कर बैठे। ऐसे बंदरों को मैं मंदिर लायक बनाता हूँ, जिन मंदिरों में स्वयं ही वो आत्माएँ पूज्य हैं और स्वयं ही पुजारी रूप में दिखाई जाती हैं।

तो जहाँ द्वापर के सात्विक समय में शिवलिंग की पूजा हुई, वो शिवलिंग वाली आत्मा कभी पूज्य थी सारे संसार के लिए, सारे संसार की दृष्टि में पूज्य थी; क्योंकि सारे संसार ने बेहद के उस बीज-रूप बाप को पहचाना था। जो ब्रह्मवाक्य मुरली में बोला-''जब फादर है तो ज़रूर फादर मिलना चाहिए। फादर सिर्फ कहें और कब मिले ही नहीं, तो वह फादर हो कैसे सकता? सारी दुनिया की जो भी आत्माएँ हैं सबसे मिलते हैं।'' (मु.ता.8.7.74 पृ.1 मध्य) जो परमधामवासी है, वो धाम तुरिया धाम है; लेकिन जड़त्वमय है या वो धाम चैतन्य है? जड़त्वमय है। वो बाप उस जड़त्वमय धाम, तुरिया धाम में पूरे 5 हज़ार साल टिककर रहता है। वो सभी चैतन्य आत्माओं का बाप है; लेकिन मज़बूरी यह है कि जो भी और-2 प्राणी हैं, वो ज्ञान धारण नहीं कर सकतीं; इसलिए ज्ञान की प्रॉपर्टी देने के लिए चैतन्य मनुष्यों के बीच में आता है। कितने टाइम के लिए आना चाहिए? ब्रह्मवाक्य में टाइम भी बता दिया- 100 साल। लेकिन 100 साल सूर्यवंशी बच्चों के लिए या सभी धर्म-वंशियों के लिए? सभी धर्म-वंशियों के लिए।

जो सूर्यवंशी-चंद्रवंशी बच्चे हैं, जो खास दो धर्म स्थापन करके जाता है। उनमें भी वो चंद्रवंशी, जो जीवन रहते सूर्यवंश में अपने को कन्वर्ट कर देते हैं, उनको कहा जाता है- विजयमाला, विजय प्राप्त कराने वाली माला। किस बात से विजय? ऐसी कौन-सी बात है जो विजय प्राप्त होती है? प्रैक्टिकल रूप में पवित्रता। ब्रह्मा द्वारा सुनना-सुनाना, शंकर द्वारा समझना और समझाना। प्रैक्टिकल हुआ? नहीं हुआ। रिज़ल्ट निकलेगा? नहीं निकलेगा। दुनिया में भी पढ़ाइयाँ होती हैं, थ्योरी में कोई पास हो जाते हैं, प्रैक्टिकल में फेल हो जाते हैं। तो फेल या पास? (सभी ने कहा-फेल हो गए) परम्परा कहाँ से शुरू हुई? संगम में जब भगवान बाप का पार्ट चलता है तब से ही ये परम्पराएँ शुरू होती हैं। ''मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः।'' (गीता 3/23)- दुनिया के सभी मनुष्य, जिन परम्पराओं को मैं आरम्भ कर देता हूँ, उन्हीं परम्पराओं पर आगे-पीछे चलते रहते हैं।

तो बोला कि जो ये संदेश है, वो 500-700 करोड़ मनुष्य-आत्माओं तक तुम बच्चों को पहुँचाना है। सभी तक पहुँचाना है- का मतलब क्या हुआ? क्योंकि अभी तक जो भी ब्राह्मण बच्चे थे, उनको बाप कहते रहे- त्रिमूर्ति के चित्र में बाप का परिचय दो; लेकिन बच्चे समझ ही नहीं सके। बाप बार-2 बोलते रहे- बच्चे अपनी ही तिक-2 करते रहते हैं, बाप का परिचय कोई देते ही नहीं। ''तुम पहले-2 बाप का परिचय दो।'' (मु.ता.10.6.65 पृ.3 आदि) ''तुम बहुत तिक-2 करते हो ना, तभी मनुष्य मूँझ जाते हैं।'' (मु.ता.1.6.65 पृ.8 आदि) अभी नम्बरवार बच्चों की बुद्धि में बैठता है कि वो 'त्वमेव माता च पिता त्वमेव' एक ही कौन है, जिस एक के स्वरूप में, संस्कार में, स्वभाव में माता भी है और पिता भी है। नहीं तो माता अलग होती है, फिमेल और पिता अलग होता है, मेल; लेकिन वो शिवलिंग रूप ऐसा

है जिसमें वो मेल भी है और फिमेल का भी स्वरूप है; जैसे- साकार और निराकार। माताएँ साकार होती हैं या निराकार होती हैं? (किसी ने कहा-साकार होती हैं) देह रूपी साकार स्वरूप का भान भूलता ही नहीं, घड़ी-2 वो भान सवार रहता है; इसलिए कहते हैं- जो पुरुष हैं, जिसे आत्मा कहा जाता है, बीज कहा जाता है, उस बीज-रूप पिता की पहली रचना कौन? (किसी ने कहा-माता) वो प्रकृति है, प्रकृष्ट-कृति, उसको जल देना है, आधार है।

जो झाड़ के चित्र में आधार रूपा क्या दिखाई गई? अरे, जड़ें दिखाई गईं कि नहीं? जल देना है, किसको देना है? जड़ों को जल देना है। कि पत्तियों को, टहनियों को, फलों/फूलों को जल देने से फायदा होगा? ये ज्ञान-जल भी है, स्नेह का जल है, प्यार का पानी है; लेकिन गंदला पानी चढ़ाना है या स्वच्छ जल चढ़ाना है? (किसी ने कहा-स्वच्छ जल) जो स्वच्छ जल है, उससे सृष्टि रूपी वृक्ष सरसब्ज होता है, गुले-गुलज़ार होता है। कब होता है? आरम्भ क्या है? आरम्भ है कि दाना ख़ाक में मिलकर गुले-गुलज़ार होता है। कोई भी धर्म का पिता बीज-रूप है, वो अगर जीवन में समाज के दिए हुए धक्के नहीं खाता है, जिसे कहते हैं- धर्म के धक्के, तो उसका धर्म कभी भी स्थापन ही नहीं हो सकता। वो तो देहधारी धर्मपिताएँ हैं, देह की स्थिति को छोड़ ही नहीं पाते हैं, भले भगवान भी इस सृष्टि पर आ जाए, तो भी देह-अहंकार नहीं छोड़ पाते; और ये पिता कैसा है? सारी मनुष्य-सृष्टि का पिता, कैसा है? जो पूरा मुर्दा हो जाता है, लक्कड़ बुद्धि हो जाता है। जिसकी यादगार नेपाल में दिखाई जाती है। कहाँ? नई दुनिया की पालना करने वाला नेई-पाल। वो है हद का नेपाल और ये है बेहद का नेपाल। इस बेहद के नेपाल में वो काठमाण्डू का, काठ का बना हुआ, मण्डूक माना मेंढक, काठ के बने हुए मेंढक की तरह ट्राँ-2 करता है, रिज़ल्ट कुछ नहीं। कब? जब ज्ञान की बरसात का मौसम संगमयुग आता है। तीन मौसम होते हैं ना- सर्दी, गर्मी और बरसात। सर्दी का मौसम है, सबका ठंडा दिमाग रहता है, वो है सतयुग-त्रेता; गर्मी का मौसम है द्वापर और कलियुग, सबका दिमाग गरम रहता है और बरसात का मौसम कौन-सा है? जब भगवान बाप आकर ज्ञान की बरसात करते हैं, तो बरसात का मौसम हो जाता है। जिस मौसम में खास शिवलिंग की पूजा होती है। कौन-से दिन? श्रावण के महीने में। जो श्रवण कुमार के नाम पर 'श्रावण' पड़ा है। जिसकी यादगार भक्तिमार्ग में ढाई हज़ार साल चलती है। उसका मुख्य दिन है- सोमवार। जहाँ खास शिव की पूजा होती है। गुलाब के फूलों से सजाया जाता है; लेकिन जिस संगठन रूपी देश में सजाया जाता है, वहाँ जो अव्वल नंबर का पुरुषार्थी, काठ का मण्डूक बन जाता है, कठ बुद्धि बन जाता है। जैसे भक्तिमार्ग में कृष्ण को मुरली दिखाते हैं। काहे की मुरली होती है, सोने की? (सभी ने कहा- काठ की) अरे, कठ बुद्धि की बुद्धि में कुछ बैठेगा? नहीं बैठ सकता। कौन हुआ कठ बुद्धि, जिसकी यादगार में हाथ में काठ की मुरली दिखाई जाती है? मुरली का एक भी प्वॉइण्ट गहराई तक बैठता ही नहीं। जो मुरली का मुख्य उद्देश्य है- बाप की पहचान। जिस बाप से साकार जीवन रहते दुख-दर्दों से मुक्ति और जीवनमुक्ति मिले, जीवन में रहते-2 मुक्ति मिले। भक्तिमार्ग में उस काठ की मुरली को धारण करने का बड़ा यादगार चलता है- मुरलीधर। वो मुरली का मर्म ही नहीं जानता। तो स्वयं भी कठ बुद्धि है और बाप को नहीं पहचानता; इसीलिए कठ बुद्धि कहा जाता है और उसका बाप भी कैसा? पहला-2 रूप माता या पिता, जब शिव बाप आते हैं? माता, परम्ब्रह्म। और माताएँ कैसी बुद्धि? (सभी ने कहा-कठ बुद्धि) कठ बुद्धि हों तो कण्ट्रोल्ड होंगी या कण्ट्रोल करेंगी? (सभी ने कहा-कण्ट्रोल्ड हो जाती हैं) दुनिया की सारी माताओं का एक ही हाल है। अगर कोई इन्दिरा गाँधी-जैसी निकल भी पड़ें, तो क्या होता है? गोली से मार दिया जाता है। तो जो नई दुनिया की पालना करने वाला, बेहद में फाउण्डेशन डालने वाला है, वो भी क्या बन जाता है? अरे, नेपाल में यादगार बनी हुई है- काठमाण्डू का मंदिर। काठ माने लकड़ी, मण्डूक माने मेंढक; ऐसा लकड़ी के मेंढक का यंत्र बन जाता है जो श्रावण के महीने में जब सुप्रीम सोल बाप आते हैं, तो कितना 'ट्राँ-2, ट्राँ-2' करता रहता है और जो मूल बात है, साकार सो निराकार वो स्वयं ही है; लेकिन काठ का मण्डूक, काठ का मेंढक है, जिसकी यादगार नेपाल में बनी हुई है। क्यों?

क्योंकि ज्ञान-बरसात के पीरियड में, पुरुषोत्तम संगमयुग में उसका पुरुषार्थी रूप मेंढक की तरह 'ट्रॉं-2' करने के अलावा कोई रिज़ल्ट नहीं देता। वो रिज़ल्ट भी तब निकलता है जब लक्ष्मी के साथ प्रवृत्ति मार्ग का पक्का बनता है और प्रवृत्ति मार्ग में ही सच्चा योग होता है। योग माने लगाव/अटैचमेंट। निराकार से या साकार से या साकार-निराकार दोनों के मेल से? (किसी ने कहा-साकार-निराकार से) स्वयं भी क्या है? स्वयं भी साकार शरीर और निराकार आत्मा का मेल है। तो जिससे अटैचमेंट हो, लगाव हो, लगन हो, वो भी कैसी होनी चाहिए? साकार-निराकार का मेल। तो दोनों जब मिलते हैं, दोनों के स्वभाव-संस्कार मिल करके एक हो जाते हैं, तो माता में पिता मिलकर एक हो जाता है, पिता में माता मिलकर एक हो जाती है- तू मुझमें समा जाए, मैं तुझमें समा जाऊँ। उसका पक्का यादगार है- शिवलिंग।

वो है बाप त्रिमूर्ति रूप में त्रिमूर्ति हाउस, जिसका दिल्ली में यादगार अंत में बनता है। ऊँचे-ते-ऊँचा बाप है या नीचे वाला बाप है? (किसी ने कहा-ऊँचे-ते-ऊँचा बाप है) त्रिमूर्ति में ब्रह्मा, विष्णु, शंकर के जो चित्र दिए हुए हैं, वो अयथार्थ हैं या अर्थ सहित हैं? (किसी ने कहा-अर्थ सहित हैं) अर्थ सहित हैं! उनको चेन्ज करने की ज़रूरत नहीं? चेन्ज करना बोला या नहीं बोला? (किसी ने कहा- बोला है) तो ये तीन आत्माएँ हैं। शिव बाप कहते हैं- मैं महाशिवरात्रि में जब साकार रूप में आता हूँ तो तीन के साथ आता हूँ। जो भक्तिमार्गीय साक्षात्कार में ये चित्र अज्ञानी चित्रकार द्वारा अयथार्थ दिया गया था, उसकी बात नहीं है। वो आदि रूप, जो तीन थे मौजूद, वो तीन मूर्तियाँ, उनको भी सम्पन्न त्रिमूर्ति शिव नहीं कहेंगे। त्रिमूर्ति शिव एक या तीन मूर्तियाँ? ब्रह्मा को शिव कहें? विष्णु को शिव कहें? अरे, विष्णु तो देवताओं का रक्षक है; राक्षसी स्वभाव-संस्कार वालों का रक्षक होता ही नहीं है। और शिव है, शिव माने सर्व प्राणीमात्र का कल्याणकारी। वो सारे संसार का कल्याणकारी है कि कोई का कल्याणकारी है, कोई का नहीं? (किसी ने कहा-सबका है) तो न ब्रह्मा का चित्र, न विष्णु का चित्र और शंकर तो याद में बैठा ही हुआ है। पुरुषार्थी है या संपन्न है? (सभी ने कहा-पुरुषार्थी है) तो वो तो अधूरा है। उसको भी त्रिमूर्ति शिव नहीं कह सकते। जिसकी यादगार है- त्रिमूर्ति हाउस, जो दिल्ली सासू माँ जगदम्बा के घर में बना हुआ है। त्रिमूर्ति हाउस- एक, दो या तीन? (किसी ने कहा-एक) त्रिमूर्ति रोड- एक ही सच्चा रास्ता या दो, तीन, चार, आठ के सच्चे रास्ते? (किसी ने कहा-एक) एक सद्गुरु का ही सच्चा रास्ता। तो वो एक कौन, जिस एक बाप का परिचय ब्रह्म वाक्य में/मुरली में दिया गया और ये भी बोला कि बाप का परिचय बाप के सिवाय कोई दे ही नहीं सकता? ''वह सतगुरू स्वयं ही आकर अपना परिचय देते हैं।'' (मु.ता.27.9.84 पृ.2 मध्य) निराकार बाप का परिचय भी निराकारी बाप के सिवाय कोई नहीं दे सकता और निराकार सो साकार बाप का परिचय भी सिवाय मनुष्य सृष्टि-वृक्ष के बीज बाप के दुनिया में कोई नहीं दे सकता। तो उसको कहा गया-'बाबा'- निराकार और साकार का मेल। ''अशरीरी और शरीरधारी का मिलन है। उनको तुम कहते हो 'बाबा'।'' (मु.ता.9.3.89 पृ.1 मध्य)

यह अव्यक्त-वाणी के रूप में बाबा का संदेश, लास्ट संदेश है, जो सभी 500-700 करोड़ तक पहुँचाना है। कौन-सा संदेश पहुँचाना है? बाबा समय का इशारा देने के लिए आए हैं- समय का इशारा; क्योंकि बाबा जानते हैं कि थोड़े-से समय के बाद साइलेंस का साधन-योगशक्ति की प्रत्यक्षता के बाद साइन्स के सब साधन समाप्त होने वाले हैं। इसलिए जो बच्चे बाबा के यज्ञ में रहकर; कौन-सा यज्ञ? क्या नाम दिया? अविनाशी रुद्र-ज्ञान-यज्ञ, जिसका इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर कभी विनाश होता ही नहीं। यज्ञ माने ईश्वरीय सेवा का यज्ञ, ईश्वरीय ज्ञान का यज्ञ। उसका नाम शिव-यज्ञ नहीं है, ब्रह्मा-यज्ञ नहीं है, विष्णु-यज्ञ नहीं है, क्या नाम है? (किसी ने कहा-रुद्र-ज्ञान-यज्ञ) रुद्र माने रौद्र रूप धारण करे। शिव रौद्र रूप धारण करता है? (किसी ने कहा- नहीं करता) वो तो प्यार का सागर है या रौद्र रूप धारण करता है? (सभी ने कहा-प्यार का सागर है) तो जो बच्चे बाबा के यज्ञ में रहकर गफलत कर रहे हैं, बाबा से

नाफ़रमानबरदार बन रहे हैं; किससे- निराकार-निर्गुण बाप से या बाबा से? शिव बाप को तो 80 साल हो गए, कभी किसी भी आत्मा रूपी बच्चे के साथ ज़ोर-जबरदस्ती की या स्वतंत्र छोड़ा? बच्चों ने बात मानी या नहीं मानी, तो भी प्यार का सागर बनकर रहा या कोई को डाँट-डपट भी दिखाई? (किसी ने कहा-बच्चों को प्यार ही किया) यज्ञ में रहकर जो बच्चे गफलत कर रहे हैं, नाफ़रमानबरदार बन रहे हैं, उनका क्या होगा? वर्णन नहीं कर सकते- क्या होगा! ये संदेश जो ज्ञानियों और योगियों के सार-स्वरूप शिवलिंग का संदेश है, सभी के पास पहुँच जाना चाहिए, जो लास्ट संदेश बताया। इसके बाद कोई संदेश नहीं देंगे; क्योंकि ऊपर जाकर फिर बाबा ये नहीं देखेंगे; कहाँ जाकर- छत पर? हाँ, सूरज-चाँद-सितारों के पार? ऊपर का मतलब है-तुम नं॰वार बच्चे परमधाम को इस सृष्टि पर उतार लेंगे। ‘‘थोड़े ही दिन इस दुनिया में हो, फिर तुम बच्चों को यह स्थूलवतन भासेगा ही नहीं, सूक्ष्मवतन और मूलवतन ही भासेगा।’’ (मु॰ता॰ 7.3.67 पृ॰2 अंत) तो जो अव्वल नम्बर उतारने वाला है, वो अपनी आत्मा को कहाँ स्थिर कर देगा? (किसी ने कहा-परमधाम की ऊँच स्टेज पर) सूरज-चाँद-सितारों से पार ले जाएगा? शरीर तो यहीं रखना है। रखना है, ऑलराउण्ड पार्ट बजाना है या शरीर भी परमधाम जाएगा ? (किसी ने कुछ कहा-...) तो वो तो शरीर से परमधाम जाने वाला नहीं है- शरीर से भी और आत्मा से भी इसी सृष्टि पर पार्ट बजाने वाला है ना! तो ऊपर जाकर फिर बाबा ये नहीं देखेंगे कि ये बच्चा कितना प्यारा था, अंदरूनी स्वभाव-संस्कार से भी कितना प्यारा था, बाहर से भी कितना प्यारा था, इस बच्चे में बाप के गुण देखने में आते थे ‘सत्यम् शिवम् सुन्दरम्’, कितना प्यारा था। वो तो ठीक है कि सभी आत्माएँ नम्बरवार आदि में सतोप्रधान और अंत में तमोप्रधान बनती हैं। ये ज़रूर है, कोई आत्मा द्वापर के आदि में ही इतनी तामसी बन जाती है, कमज़ोर बन जाती है कि ऊपर परमधाम रूपी घर से आने वाली पावरफुल आत्मा उसी कमज़ोर आत्मा को दबोच लेती है। इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट आएँगे, तो देवता धर्म की कमज़ोर-से-कमज़ोर आत्मा को दबोचेंगे या पावरफुल को दबोचेंगे? (किसी ने कहा-कमज़ोर को) क्यों? क्योंकि उन कमज़ोर आत्माओं ने श्रीमत को पूरा पकड़ा ही नहीं, न पकड़ने के कारण कर्मेन्द्रियों से श्रेष्ठ बनते हैं या कर्मेन्द्रियों को देहभान में आकर जल्दी से नीचे उतार देती हैं? जैसे बोला- सतयुग हो, चाहे त्रेता हो, कोई-2 को दो बार/तीन बार भी बच्चे पैदा होंगे या सबको एक ही बार होंगे? कोई-2 को दो बार/तीन बार भी होंगे। जो प्रजा वर्ग में आने वाली आत्माएँ हैं, उनको दो/तीन बार भी बच्चे होते हैं और यथा राजा तथा प्रजा भी वैसी ही होती है। तो वो आत्माएँ जल्दी-2 नीचे उतरेंगी या धीरे-2 नीचे उतरेंगी? (किसी ने कहा-जल्दी-2 उतरेंगी) तो जो आत्माएँ इस्लाम धर्म में कन्वर्ट होने वाली होंगी, उन्होंने संगमयुग में बाप की श्रीमत को फॉलो ही नहीं कर पाया। ‘‘जैसा संग वैसा रंग।’’ एक श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ को पहचान कर उसका संग करेंगे तो श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ पावरफुल बनेंगे और नहीं पहचानेंगे तो कमज़ोर बनेंगे या पावरफुल बनेंगे? (किसी ने कहा-कमज़ोर बनेंगे) तो खास संगमयुग में इस्लाम धर्म की आत्माएँ व्यभिचारी स्वभाव की पक्की होने के कारण देह की भ्रष्ट इन्द्रियों का व्यभिचार तो भले त्याग देती हैं; लेकिन जो श्रेष्ठ इन्द्रियाँ हैं आँखें, उनका व्यभिचार नहीं त्याग पातीं और न त्याग करने के कारण उनकी शक्ति उस नेत्रों के व्यभिचार से ज़्यादा क्षीण होती जाती है। उनमें भी जो उनका बीज बाप है, कोई होगा या नहीं? (किसी ने कहा- होगा) जो उनकी जड़ आधारमूर्त हैं, जो सतयुग में नं॰वार नारायण बनते हैं, वो जास्ती नीचे गिरते हैं और द्वापरयुग शुरू होते ही इस्लाम धर्म की आत्माएँ जिनमें नम्बरवार प्रवेश करती हैं, वो द्वापर के आदि में ही बहुत कमज़ोर हो जाती हैं। तो कोई आत्माएँ पहले कमज़ोर बनना शुरू कर देती हैं, कोई आत्माएँ जिन्होंने ज़्यादा योगबल की शक्ति धारण की और उन्होंने ही योगबल की शक्ति ज़्यादा धारण की होगी जिन्होंने ज्ञान-बल ज़्यादा धारण किया होगा। जितना ज्ञानी उतना योगी। तो जो योगीश्वर कहा जाता है, एक सुप्रीम सोल के साथ योग में इतना माहिर हो जाता है कि वो सृष्टि के अंत में धीरे-2 जाकर नीचे गिरेगा। टोटली कब गिरेगा? अंतिम 84वें जन्म में जाकर नीचे गिरता है।

तो बताया कि बाबा ये नहीं देखेंगे कि ये बच्चा कितना प्यारा था, कितना अच्छा था। बाबा के सामने अब सबका रजिस्टर खुलने वाला है। जो मुरली में बोला-अंत समय में किसी का कुछ भी छुपा हुआ नहीं रहेगा। कुछ-न-कुछ छुपा हुआ होता है या नहीं होता है? (किसी ने कहा- होता है, बाबा!) जो बहुत प्यारी चीज़ होती है वो अंदरूनी जेब में छुपाके रखते हैं। तो सबसे जास्ती अंदरूनी जेब है बुद्धि रूपी पॉकेट। ऐसी-2 प्यारी चीज़ भी होती है कि जो प्यार का सागर कहा जाता है, वो भी उनके सामने कुछ भी नहीं। कहते हैं ना-''दिल लगी गधी से तो परी क्या चीज़ है।'' (मु.ता.19.2.74 पृ.2 आदि) जो प्यार का सागर बाप बोलता है कि अपना पूरा-2 पोतामेल देने वाला कोई कोटों में एक है। ''आज यह पाप कर्म किए। ऐसा सच्च लिखने वाला कोटों में कोऊ में कोऊ ही है।'' (मु.ता.16.4.70 पृ.1 मध्य) बाकी तो फिर नम्बरवार हो गए। तो नम्बरवार हो गए, तो उनका पोतामेल का रजिस्टर गुप्त रहेगा या अभी खुलने वाला है? ''तमाशा होने वाला है, पर्दा खुलने वाला है, कोई हँसने वाला है, कोई रोने वाला है।'' अभी यज्ञ समाप्ति की ओर है, यज्ञ माने रुद्र-ज्ञान-यज्ञ। ज्ञान तो मनुष्य ही लेते हैं। जो भी 500-700 करोड़ मनुष्य हैं, उनको जो भी ज्ञान लेना है, कोई को शुद्ध लेना है, कोई को मिक्स्चर लेना है; कोई को एक से लेना है, कोई को अनेक गुरुओं से लेना है। लेना सबको है। तो अब वो ज्ञान-यज्ञ समाप्ति की ओर है।

जो पहले ही बता दिया- सुप्रीम सोल बाप के पास जो कुछ भी था, सब-कुछ अब बच्चों को दे दिया, मेरे पास कुछ भी नहीं रहा देने के लिए। ''बाप ने अपने पास कुछ रखा ही नहीं है। वह तो एक सेकेण्ड में पूरा ही वर्सा दे देते हैं। जो कुछ भी देने का रहता ही नहीं।'' (अ.वा.8.7.73 पृ.125) किसने बोला? शिव बाप ने बोला। सब अपने-आप समय सम्पन्न बना रहा है। सबको सम्पन्न बनाने वाला कौन है? (किसी ने कहा-समय) समय जड़ है या चैतन्य है? (किसी ने कहा-जड़ है) जड़ शक्तिशाली होता है; जैसे- जड़ प्रकृति या चैतन्य आत्मा शक्तिशाली होती है; जैसे- परमपुरुष? (किसी ने कहा-चैतन्य शक्तिशाली) तो ये क्यों कहा- सब अपने-आप समय सम्पन्न बना रहा है? समय सम्पन्न बनाने वाला है या अपने-2 पुरुषार्थ से सम्पन्न बनेंगे? (किसी ने कहा-अपने-2 पुरुषार्थ से) तो ऐसे क्यों कहा? किसने कहा? कौन बोल रहा है? ब्रह्मा बाबा बोल रहे हैं। माने ब्रह्मा बाबा ने उस साकार-निराकार के मेल बाबा को पूरा-2 जान लिया, जो कालजीत है, कालों का काल- महाकाल है? जिसको काल माने समय खा ही नहीं सकता, उसको ब्रह्मा ने पहचान लिया? (किसी ने कहा- नहीं पहचाना) क्यों नहीं पहचाना? क्योंकि ब्रह्मा दादा लेखराज की आत्मा अभी भी, जो दूसरे धर्म में कन्वर्ट होने वाली उनकी गोद की कुखवंशावली आत्माएँ हैं-इस्लामी, बौद्धी, क्रिश्चियन आदि, उनमें भी जो भारतीय धर्मों की कन्वर्टिड आत्माएँ हैं, उनके प्रभाव में है। उन भारतीय धर्मों की आत्माओं में जो सशक्त, सबसे पावरफुल भारतीय विधर्मी हैं- बौद्धी। बौद्धी धर्म में यह मान्यता महात्मा बुद्ध ने फैलाई कि कालचक्र ही मुख्य है, भगवान अलग से कुछ नहीं होता। ईश्वर कुछ भी नहीं होता है, कालचक्र में सब बंधे हुए हैं। तो क्या ऐसा है? शिवबाप ने हमको ऐसा सिखाया? (किसी ने कहा- नहीं बाबा!) ये ड्रामा माने कालचक्र, उसको मुख्य रखेंगे या आत्मा के पुरुषार्थ को आगे रखेंगे? (किसी ने कहा-आत्मा के पुरुषार्थ को) मुख्य क्या है? 'पुरुष' माने आत्मा, 'अर्थ' माने लिए। माने आत्मा के लिए जो भी किया जाए, वो पुरुषार्थ।

जो ये धर्मपिताएँ हैं ना- इब्राहीम, बुद्ध, क्राइस्ट, ये पूरा आत्मा के लिए नहीं कर पाते। जो भी करते हैं, देह-अभिमानी धर्मपिताएँ हैं; इसीलिए देह के कल्याण में ज़्यादा बुद्धि रहती है, आत्मा का कल्याण कर ही नहीं पाते और ये आत्माएँ विधर्मी हों या विदेशी हों, ये सब ब्रह्मा की गोद में खेलने वाली हैं। कुखवंशावली हैं या मुखवंशावली हैं? (किसी ने कहा-कुखवंशावली) 'कुख' माने गोद की वंशावली हैं। उनको फखुर रहता है- हमने साकार बाबा की गोद ली है! तुम कल के बच्चे हो, तुम क्या जानो- ज्ञान क्या होता है! बहुत ही अहंकारी। उन बच्चों से अम्मा प्रभावित होगी या बाप प्रभावित होगा? (सभी ने कहा- अम्मा प्रभावित होती है) जो मनुष्य-सृष्टि की माँ कही जाती है, वो प्रभावित

होती है। अभी दुनिया में भी देख लो, जो मनुष्य-सृष्टि का पहला बच्चा होता है, मनुष्य सृष्टि-वृक्ष का 16 कला सम्पूर्ण पहला पत्ता कृष्ण बच्चा को ही देखो, माताएँ उस बच्चे से प्रभावित हैं या नहीं हैं? (किसी ने कहा-प्रभावित हैं) कैसे? यहाँ तक प्रभावित हैं कि कृष्ण बच्चे को ही गीता-पति भगवान माने बैठी हैं। नहीं? अरे! दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होने वाली भारत की आत्माएँ, जो अभी संगम की शूटिंग में लास्ट की नीची आठ कुरियों के बच्चा-बुद्धि ब्राह्मण बने हैं, जो ब्रह्मा की गोद को ही सब-कुछ समझे बैठे हैं; ब्रह्मा के मुख से निकले शिव निराकार के ज्ञान को कुछ भी महत्व नहीं देते, वो आत्माएँ गीता का भगवान किसको समझती हैं? कृष्ण बच्चे को ही समझे बैठी हैं। उनकी अम्मा कौन है? (किसी ने कहा-ब्रह्मा/जगदम्बा) जो सारे ही ब्रह्माकुमार-कुमारियों को-चाहे आधारमूर्त हों, चाहे बीज-रूप हों- आखरीन माया से हाथ मिलाकर इतना शक्तिशाली काम कर दिखाती है कि सारी दुनियाँ के सारे ही मनुष्यमात्र को अपने कण्ट्रोल में ले लेती है- सिखों में भी शेरावाली का गायन है ना- ‘‘राज करेगा खालसा।’’ सब बुद्धिमती माया के प्रभाव में आ जाते हैं, माया किसी को छोड़ती ही नहीं। अष्टदेव आत्माएँ, जो जगत्पिता के सर पर श्रेष्ठ मणकों के रूप में रखे जाते हैं, उनको भी नहीं छोड़ेगी? अरे, किसी को नहीं छोड़ती माने एक मायापति कहो या एक प्रकृतिपति कहो या एक लक्ष्मीपति, उसको छोड़कर और किसी को छोड़ने वाली नहीं है; क्योंकि महाकाली जगदम्बा जो तामसी रूप धारण करती है, उसके भी सिर पर चंद्रमा विराजमान है। वो ज्ञान-चंद्रमा भी अधूरा है या सम्पन्न? (किसी ने कहा-अधूरा है) जब तक अधूरा है तब तक, चाहे मुस्लिम धर्म कहा जाए, चाहे इस्लाम धर्म कहा जाए, कोई और धर्म-वंशी भी हैं, जिनमें अधूरे चंद्रमा को बहुत महत्व देते हैं; सूर्य को बहुत महत्व नहीं देते हैं; क्योंकि वो आत्माएँ संगम में ज्ञान-चंद्रमा ब्रह्मा की गोद में पली हैं; इसलिए उनमें ये संस्कार हैं कि ब्रह्मा उर्फ कृष्ण बच्चे की आत्मा को ही सब-कुछ मानती हैं, पूरा-2 उसके नक्शेकदम पर चलती हैं। आज भी दुनिया में देखो, खास भारत में ही देखो, खुदा-न-खास्ता परिवार का बाप यदि चला जाए तो माताएँ किसके आधीन हो जाती हैं? बच्चों के आधीन हो जाती हैं। ये परम्परा कहाँ से चलती है? कब की बात है? (किसी ने कहा-संगम की शूटिंग में यज्ञ के आदि में) सम्पन्न रूप में कब की बात है? जब तीसरी बार ब्राह्मणों की सृष्टि रची जाती है और उसे खारिज़ किया जाता है। सन् 2017/18 की बात है। जैसे आदि में हुआ था, सारी दुनियाँ एक ओर और एक आत्मा दूसरी ओर हो गई। ऐसे ही ड्रामा का आदि सो अंत चलता है। तो यह क्यों चलता है? क्योंकि सभी बीज-रूप मनुष्य-सृष्टि के बाप के बच्चा-बुद्धि बच्चे किसके पक्ष में आ जाते हैं? प्यार देने वाले ब्रह्मा सो जगदम्बा के पक्ष में आ जाते हैं। कृष्ण और क्राइस्ट की राशि भी मिलाई जाती है। ‘‘क्रिश्चियन और कृष्ण, रास मिलती है।’’ (मु.ता.1.5.73 पृ.3 अंत) क्रिश्चियन्स का कैसा प्यार होता है- दिखावटी या अंदरूनी? (किसी ने कहा-दिखावटी) उन्होंने ये प्यार कहाँ से सीखा, किसकी गोद में बैठकर सीखा? संगम में कृष्ण वाली आत्मा ब्रह्मा की गोद में बैठकर सीखा। उस बाहरी प्यार से, जो बच्चा-बुद्धि होते हैं वो प्रभावित होते हैं, बाप को नहीं पहचान पाते; इसीलिए बोला कि ‘‘बच्चे यज्ञ में रह करके गफलत कर रहे हैं, बाबा से नाफ़रमानबरदार बन रहे हैं।’’ कह तो रहे हैं बाबा की मुरली की बात; लेकिन ब्रह्मा बाबा को ही इस दुनियाँ में मास्टर सर्वशक्तिवान समझ रहे हैं; समय को, कालों के काल महाकाल-कालचक्र को सर्वशक्तिवान नहीं समझ रहे हैं।

अम्मा किसके प्रभाव में आ गई? बौद्धी बच्चों के प्रभाव में आ गई। जो बुद्ध भी इस भारत देश में एक भगवान का अवतार बन करके बैठ गए। आज दुनिया में जो भी धर्म फैले हुए हैं, उनमें एक ही हिस्ट्री में प्रसिद्ध धर्म है, जो भारत में भगवान के रूप में मान्यता प्राप्त है। कौन-सा धर्म? बौद्ध धर्म। किस आधार पर? अहिंसा परमोधर्म। अहिंसा ही परम धर्म है। कैसी अहिंसा उन्होंने हिस्ट्री में दिखाई? (किसी ने कहा- कायरता वाली) विदेशियों ने आक्रमण किया और उन्होंने हाथ उठाय दिए- हम युद्ध नहीं करेंगे, युद्ध करने से हिंसा होती है; हम अहिंसक रहकर जीवन में रहेंगे। उससे क्या हुआ? बीबी, बाल-बच्चे सदाकाल के लिए विदेशियों के आधीन हो गए। आधीन होने के बाद वो

बच्चे जन्म-जन्मान्तर दुखी हुए या सुखी हुए? (किसी ने कहा-दुःखी हुए) अब बताओ, जो अपनी रचना को ही 'अहिंसा परमोधर्म' कह करके सुरक्षा नहीं दे सकता, उसकी अहिंसा सच्ची है या निरर्थक है? (किसी ने कहा-निरर्थक है) इस बात की गहराई को ब्रह्मा नामधारी दादा लेखराज की आत्मा नहीं समझ सकती; क्योंकि बच्चा-बुद्धि आत्मा है। इसीलिए प्रभावित होकर कह रही है- सब अपने-आप कौन सम्पन्न बना रहा है? समय सम्पन्न बना रहा है। फिर यह भी बोला- ''समय समाप्त हो चुका है।'' सम्पन्न भी बना रहा है और समाप्त भी हो चुका है- दो बातें कैसे हो सकतीं? या तो सम्पन्न बनाए या तो खुद समाप्त हो जाए। ये मत सोचना, अभी तो 20 साल पड़े हैं। किससे बोला? किसने बोला? (किसी ने कहा-शिवबाबा ने बोला) शिवबाबा ने बोला! यह वाणी सभा में नहीं; व्यक्तिगत रूप से गुलज़ार दादी के मुख से चली है। जैसे अन्य अव्यक्त-वाणियाँ चलती थीं, वैसे ही चली है। तो यह मत सोचना- 20 साल पड़े हैं। ब्रह्मा की आत्मा ने गुलज़ार दादी के मुख से बोला- ''यह मत समझना- 20 साल पड़े हैं।'' किससे बोला? (किसी ने कहा-बच्चों से) कौन-से बच्चों से बोला? (किसी ने कहा-बेसिक के) बेसिक के बच्चों से बोला और एडवांस के बच्चों से भी बोला, अभी भी एडवांस ज्ञान उनकी बुद्धि में कुछ भी नहीं बैठ रहा है! अगर नहीं बैठ रहा है, तो इसी सीज़न की अव्यक्त-वाणी में क्यों बोला-दिल्ली में राजधानी स्थापन हो रही है, बाप स्थापन कर रहे हैं। "हमारी राजधानी यही दिल्ली बने।'' (अ.वा.15.11.16 पृ.2 मध्यादि) बोला या नहीं बोला? (किसी ने कहा-बोला) तो दोनों के लिए बोला या ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों के लिए ही बोला? (किसी ने कहा-दोनों के लिए बोला) दोनों समझते हैं कि अभी हमारे लिए 20 साल पड़े हैं; लेकिन पूरी राजधानी स्थापन हो जाएगी तो राजा की धारणा शक्ति, जो भी माला रूपी 108 राजाओं का संगठन 2028 में तैयार होगा, उनकी नं॰वार धारणा शक्तियाँ सम्पन्न स्टेज में आ जाएँगी या नहीं? (किसी ने कहा- आ जाएँगी) और यथा राजा तथा प्रजा भी सम्पन्न हो जाएगी। तो जो बीज-रूप स्टेज में नम्बरवार रहने वाले सूर्यवंशी बच्चे हैं या इसी जीवन में कन्वर्ट होने वाली चंद्रमा के वंश की आत्माएँ हैं, दोनों के लिए बोला- ऐसे मत समझना- 20 साल पड़े हैं। 100 साल का युग है तो 20 साल पड़े हैं। बच्चे ऐसे समझे बैठे हैं या नहीं? 20 साल तो हैं ही नहीं। अच्छा, 20 साल तो हैं ही नहीं, तो कितने साल हैं? सो नहीं बता रहे! अरे जब बता दिया, मुरली में ही बोल दिया ''तमोप्रधान से सतोप्रधान बनने में 40-50 वर्ष लगते हैं।'' (मु.ता.6.10.74 पृ.2 अंत) तो जो भी विजयमाला के 108 युगल मणके हैं, उनको पूरी राजधानी स्थापन करने में कितना टाइम लगेगा? (किसी ने कहा-50 साल) माने 2028 और यथा राजा (किसी ने बीच में कहा-तथा प्रजा), राजाओं के तैयार होने की देरी है, प्रजा तो फट से राजाई में आ जाती है। तो 20 साल ये जो समय बताया, वो दुनिया वालों के लिए बताया- पुरुषोत्तम संगमयुग ज़्यादा-में-ज़्यादा 100 साल। 'पुरुष' माने आत्मा और आत्माओं के बीच में उत्तम से उत्तम, 500-700 करोड़वीं आत्माओं में उत्तम से उत्तम लक्ष्मी-नारायण नर से नारायण बनने वालों तक। सभी उत्तम हैं या नहीं हैं? (किसी ने कहा-नम्बरवार हैं) तो पुरुषोत्तम संगमयुग ज़्यादा-में-ज़्यादा कितना साल हुआ? (किसी ने कहा-100 साल) लेकिन किनके लिए- तुम बच्चों के लिए या दूसरे धर्मों में कन्वर्ट होने वाली आत्माओं के लिए? विदेशी और विधर्मियों में कन्वर्ट होने वाले जो नं॰वार कुरी के ब्राह्मण सम्प्रदाय अभी हैं, उनकी बात है या तुम्हारे लिए है? (किसी ने कहा- तुम बच्चों के लिए) तुम बच्चे कहा जाता है जो सन्मुख बाप के बैठने वाले हैं।

ये बच्चा या इनके फॉलोअर बच्चे, कौन हुए? ब्रह्मा और ब्रह्मा की गोद में पलने वाली आठ धर्मों की कमज़ोर कुरी की ब्राह्मण-आत्माएँ, वो सब हो गए ये, जो और-2 धर्मों में कन्वर्ट हो जाती हैं। माँ के प्रभावित होने के साथ-ही-साथ बच्चे भी कन्वर्ट हो जाते हैं। बच्चा-बुद्धि हैं, माँ को फॉलो करेंगे ही! तो दो तरह के बच्चे हो गए- तुम बच्चे और ये बड़ा बच्चा और इनके फॉलोअर बच्चे और वो कन्वर्टिड बच्चे और उनके फॉलोअर बच्चे। कौन हुए? विधर्मी और

विदेशी बच्चे, जो डायरैक्ट परमधाम से आते तो हैं ही। वो बहुत दूर वाले हो गए, यह ब्रह्मा और उनके फॉलोअर तो फिर भी बाज़ू वाले हैं और तुम तो बिल्कुल नज़दीक हो। बाबा तुम बच्चों को सुनाते हैं, ये तो बीच में सुन लेता है, कौन? (किसी ने कहा-ब्रह्मा बाबा) और उनके फॉलोअर? (किसी ने कहा- वो भी) तो बताया, ऐसे मत समझो कि अभी 20 साल तुम्हारे लिए हैं, 20 साल तो हैं ही नहीं। अब बाबा को बता देना चाहिए ना- 20 साल नहीं हैं तो कितने साल हैं! अभी उतनी बात बुद्धि में बैठना बाकी है। क्यों? जब तक पूरी राजधानी स्थापन नहीं होगी तब तक अम्मा ब्रह्मा अपने बच्चों का पक्ष लेती ही रहेगी। अम्मा जो दाढ़ी-मूँछ वाली अम्मा थी, जिसका गायन शास्त्रों में नहीं है, यादगार मंदिर नहीं हैं, मूर्तियाँ नहीं हैं, याद भी नहीं होती है, वो दाढ़ी-मूँछ वाली अम्मा जिसकी पूजा नहीं होती है, वो जब क्लिन शेव वाली जगदंबा माता में प्रवेश करती है तब उसकी पूजा होती है। तो वो पार्ट अभी बाकी है या नहीं बाकी है? अरे! वो पार्ट चलेगा या नहीं चलेगा? (किसी ने कहा-चलेगा) तो जो पार्ट अभी चलना बाकी है; इसलिए बोला कि तुम बच्चों के लिए 20 साल तो हैं ही नहीं। तो बच्चे तो जानते हैं, पहले ही बोल दिया, बाबा तो जानते हैं ना, आप भी जानते हैं कि बाबा क्या कहना चाहते हैं। कितने साल हैं? अरे! आपके पुरुषार्थ के लिए कितने साल हैं? (किसी ने कहा-10 साल) 20 साल तो हैं ही नहीं, सब-कुछ अचानक-2 होने वाला है। और एक और बात बाबा याद दिलाना चाहते हैं- ये शरीर प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए। ये शरीर माने क्या? ये शरीर प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए, सिर्फ़ बाबा की आवाज़ पहुँचनी चाहिए। किसको कहा 'बाबा'? (किसी ने कहा-ब्रह्मा बाबा) दुनिया में बाबा की आवाज़ पहुँचनी चाहिए। जैसे ब्राह्मणों की दुनिया में, आज जो हुजूम के ब्राह्मण हैं, पाण्डवी ब्राह्मण तो थोड़े होते हैं, हुजूम के ब्राह्मण जो आठ नीची कुरियों वाले बहुत हैं, वो भी ब्राह्मणों की दुनिया हैं ना! जैसे भक्तिमार्ग में देखा गया कि दुनिया समझती थी कि दुनिया में एक बड़ा भारी आतंकवादी आया हुआ है, ऐसे ब्राह्मणों की दुनिया में भी भारी हुजूम यही समझे बैठा है, खासकर बच्चा-बुद्धि ब्राह्मणों में, कौन आया हुआ है? 'ओशामाबिनलादेन'। 'शामा' माना शाम आ गई। दुनिया की नज़रों में सूरज छुपने वाला है। 'ओ-शामा-बिन-ला-देन,' जो कुछ तुम्हारे पास तन-मन-धन है, वो सब दे दो; नहीं तो छोड़ूँगा नहीं। तो क्या करता था वो? उसकी आवाज़ दुनिया में जा रही थी या दुनिया के सामने खुद जा रहा था। (किसी ने कहा- उसकी आवाज़ जा रही थी।)

ऐसे ही बताया, ये शरीर प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए। किसके सामने प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए? दुनिया के सामने प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए। अच्छा, जो ब्रह्मा की गोद के सूर्यवंशी न बनने वाले बच्चे हैं, सूर्यवंश में कन्वर्ट होने वाले बच्चे नहीं हैं, और-2 धर्मों में भले कन्वर्ट हो जाएँ, गाँठ बाँधे बैठे हैं, उन बच्चों में प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए या तुम बच्चों के बीच प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए? (किसी ने कहा- उन विदेशी-विधर्मी बच्चों के सामने) ये शरीर प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए, सिर्फ़ बाबा की आवाज़ जानी चाहिए। जनक बच्ची को ये संदेश पहुँचाना है, ताकि वो बच्ची सबकी क्लास करा सके। सबकी माने? अरे! बात हो रही थी आवाज़ पहुँचाने की। आवाज़ कहाँ से निकलती है? विदेशों से बाप की प्रत्यक्षता की आवाज़ नहीं निकलेगी? (किसी ने कहा-निकलेगी) जैसे एडवांस के आदि में भी हुआ, बीज-रूप आत्माओं की दुनिया जब से आरम्भ हुई, तो विदेशी बीजों ने पहले पहचाना, सहयोग दिया या स्वदेशियों ने सहयोग दिया? (किसी ने कहा-विदेशियों ने सहयोग दिया) इस्लाम धर्म का बीज हो, क्रिश्चियन धर्म का बीज हो, बुद्ध धर्म का बीज हो, वो ही विदेशी बीज सहयोगी बने। तो किसके पास आवाज़ पहुँचाना? जो वहाँ की हेड मानी जाती है। कौन? जनक बच्ची। संदेश पहुँचाना ताकि वो सबकी क्लास करा सके- कोई भी धर्म में कन्वर्ट होने वाले हों, सबकी क्लास करा सके; क्योंकि किसी भी धर्म में जाने वाली आत्माएँ होंगी, वो सब तो मातृदेश की माताएँ होंगी या विदेश के बाप होंगे? (किसी ने कहा- मातृदेश की) भारत जो मातृदेश है, वहाँ की माताएँ हैं, जो ब्रह्मा-जैसे बच्चों को प्रधानता देती हैं; बाप के महत्व को नहीं जान पातीं। तो वो जनक (जन=सब आत्माओं का प्रत्यक्षता रूपी जन्म+करने वाली) अर्थात्

लक्ष्मी बच्ची है, सबका क्लास कराए। कौन-सा क्लास? जो शिवलिंग का अंतिम संदेश अभी दिया जा रहा है। सभी बच्चों को समय का इशारा दे सके; क्योंकि बच्ची को भी अभी इस साकार सो निराकारी बाबा के पास आना है ना! कौन-से बाबा के पास आना है? जो जनक बच्ची है, उनको कौन-सी आत्मा के ऊपर, कौन-सी साकार आत्मा है इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर जिस पर पक्का विश्वास बैठा हुआ है? तो बाबा के पास आते-2 वो समय जो इशारा देने का है, वो इशारा दे करके ही आए, बिना इशारा दिए नहीं आए। कौन-सा समय का इशारा? अरे! चाहे वो 10 साल पड़े हैं, चाहे वो 20 साल पड़े हैं, वो पहले खुद समझे- 10 साल किसके लिए और 20 साल किसके लिए? वो इशारा देने का है। वो इशारा दे करके ही आए; क्योंकि अभी, अभी माने कभी? जब यह वाणी चल रही है। अभी दूसरी बच्ची (गुल्ज़ार) का जो शरीर है, बहुत नाज़ुक है! बाबा उस शरीर का अब यूज़ नहीं कर सकते, इतना नाजुक शरीर हो गया है; इसलिए ये जो बाबा बोल रहे हैं, वो सभी तरफ़ जाना चाहिए। सभी तरफ़ माने आठ दिशाएँ जो गाई हुई हैं- उत्तर-दक्षिण, पूर्व-पश्चिम, चारों दिशाओं के कोनों में भी, चारों ओर जाना चाहिए। इसमें अगर संशय आया तो फेल हुआ। ये नहीं सोचना कि अभी बाबा ने ब्रह्मा का तन लिया, फिर दूसरी बच्ची का तन लिया। कौन-सी बच्ची? गुलज़ार दादी का। अब किसका तन लिया? ब्रह्मा का भी तन छूट गया, दूसरी बच्ची का भी तन लुंजुम-पुंजुम, बहुत कमज़ोर हो गया। कौन-से बाबा ने तन लेना है सो लिया? (किसी ने कहा-ब्रह्मा बाबा, किसी ने कहा- शिव बाप ने) बाबा ने जिसका तन लेना है वो लिया; क्योंकि ये तन गुप्त रूप में है। कौन-सा तन गुप्त रूप में है? ब्रह्मा बाबा का तो गया, वो तो गुप्त हो ही गया, अव्यक्त हो गया; गुप्त होने, न होने का सवाल ही नहीं! रहा गुलज़ार दादी (का तन), तो वो सबके सामने प्रत्यक्ष है या छुपाके रखा गया है? तो जिसका तन लेना था उसका तन लिया। ये तीसरा तन गुप्त रूप में है, किसी के सामने नहीं आना चाहिए। किसी माने किसके सामने नहीं आना चाहिए? (किसी ने कहा-विदेशी-विधर्मी बच्चों के सामने) जो बच्चे हैं, वो सब सूर्यवंश के हैं या दूसरे धर्मवंशों के भी बीज बैठे हैं? हैं या नहीं? (किसी ने कहा-हैं) तो पता चलेगा? चलता है कि कौन सूर्यवंशी हैं या कौन सूर्यवंश में कन्वर्ट होने वाले हैं और इन बीज-रूप आत्माओं में कौन-2 बच्चे हैं जो पक्के 8 सूर्यवंशियों में कन्वर्ट होने वाले नहीं हैं? उन्होंने ग्लानि करने की गाँठ बाँध रखी है। तो किसी विरोधियों के सामने ये रथ नहीं आना चाहिए, आवाज़ जानी चाहिए, चाहे वो दुनियावी रूप में विदेशी या विधर्मी हों अर्थात् द्वापुर-कलियुग में डायरैक्ट परमधाम से उतरी हुई आत्माएँ हों, चाहे वो उन विदेशी-विधर्मी संगठनों में कन्वर्ट होने वाली ये भारत की आधारमूर्त आत्माएँ हों, चाहे दूसरे धर्मों के बीज-रूप आत्माएँ हों। उन तक भी ये आवाज़ जानी चाहिए; लेकिन शरीर उनके सामने प्रत्यक्ष नहीं होना चाहिए। अच्छा, अगर ये तन सामने प्रत्यक्ष हो जाएगा तो क्या होगा? अरे, कुछ हो जाएगा क्या? अरे, हिस्ट्री में जितने भी धर्मपिताएँ आए, उनका क्या हुआ? क्राइस्ट का क्या हुआ? मोहम्मद का क्या हुआ? जो भी धर्मपिताएँ आए, सबको इस दुनिया में आ करके, उस समय की दुनिया वालों के बीच मात खानी पड़ी या विजयी होकर गए? (किसी ने कहा- मात खानी पड़ी) बाद में उनके फॉलोअर्स ने कितनी भी शोहरत कर दी हो! तो बस, आवाज़ ही जानी चाहिए। समझ में आया ना! हाँ! वहाँ तक क्या, जहाँ तक आवाज़ जा सकता है। माने जो परमधाम से उतरने वाली द्वैतवादी आत्माएँ हैं या जो दूसरे-2 धर्मों में कन्वर्ट होने वाली भारत की आधारमूर्त या बीज-रूप आत्माएँ तुम बच्चों के भी बीच में बैठी हुई हैं, सबके पास आवाज़ जानी चाहिए। जहाँ तक आवाज़ आप पहुँचा सकते हैं, वहाँ तक बाप की आवाज़ पहुँचनी चाहिए। कौन-से बाप की आवाज़? आत्माओं के निराकार सो साकार कम्बाइंड शिवलिंग बाबा की आवाज। जहाँ तक आवाज़ पहुँचा सकते हो, पहुँचाओ। पहुँचेगी? पूछा। अरे, तुम्हारी आवाज़ जो मुठ्ठ-भर हो, पाँच पाण्डव ही तो हैं। हैं या नहीं? पाँच पाण्डव हैं। पाँच पाण्डव जीते जी, शरीर रहते-2 स्वर्ग में जाते हैं? नहीं जाते हैं। कौन जाते हैं? जो असल सूर्यवंशी हैं- युद्ध+ष्ठिर, चाहे संगम हो, चाहे सतयुग हो, त्रेता हो, द्वापर हो, कलियुग हो, झूठ से निरन्तर युद्ध करते हैं; एक सत् स्वरूप सदाशिव बाप के साथी बनकर रहते हैं। उनसे कहा, पूछा- आवाज़ पहुँचेगी? इतना निश्चय है कि हम आवाज़

पहुँचाएँगे? पहुँचेगी ना! अरे, ब्रह्मा बाबा को संशय आ रहा है। संशय आ रहा है, तब बार-2 पूछ रहे हैं या पक्का निश्चय हो गया कि पहुँचाएँगे? (किसी ने कहा-संशय आ रहा है) हाँ!

क्योंकि आज बच्चों में ज्ञान कुछ ज़्यादा ही चल गया है ना; लेकिन बाप का ज्ञान नहीं, खुद का ज्ञान चल गया है। खुद को बाप से भी ज़्यादा ज्ञानी समझते हैं। किसी को 20 साल हुए; इण्टरोड्यूज़ कर दिया, जो समझते हैं- हम बाप से भी ज़्यादा ज्ञानी हो गए, ज्ञान के आधार पर हम बाप से भी टक्कर ले सकते हैं। उनका खास परिचय भी दे रहे हैं- किसी को 20 साल हुए, किसी को 30 साल हुए, किसी को 40 साल हुए, एडवांस ज्ञान में आए हुए, वो समझते हैं कि हम बाप के भी बाप बन गए। कौन हैं वो विरोधी बने बच्चे? 40 साल से ही एडवांस में कौन आया और बाप का भी बाप बनके बैठ गया और अपने को बाप समझकर बार-2 बाप की धुनाई-पिटाई भी कर दिया। अरे! बाप को तो हक है ना! बच्चे को सुधारने का हक है या नहीं है? (किसी ने कहा-है) बाप अपने को बाप समझेगा तब हक है या बिना बाप समझे हक है? (किसी ने कहा-बाप समझने से हक है) हाँ! समझते हैं कि बाप के भी बाप बन गए और बाप बने हुए कोई को 40 साल हो गए। क्या कहा? प्रैक्टिकल में बाप बन गए। कोई को 30 साल हो गए, बाप के बाप बनकर बैठ गए और विरोधी एक्ट करने लगे। कोई को 20 साल हुए। 2017-2018 में से 20 साल घटाया, तो कितना आया? (किसी ने कहा-97-98) तो उसने तब से कानूनन सक्रिय विरोध करना शुरू कर दिया, प्रैक्टिकल में किया भी होगा, प्रूफ भी मिल जाएगा; लेकिन ये नहीं सोचते कि बाप तो बाप ही है। जो मुरली में बार-2 ब्रह्मवाक्य बोलता है-बच्चे, तुम्हारा बाप आया हुआ है। बोलता है बार-2 कि नहीं? (किसी ने कहा-बोलता है) जो आप बने हो, वो उसी बाप की वजह से बने हो। बाप ने ऐसा ज्ञान दिया, तब तुम्हारी बुद्धि में बैठा कि तुम किस धर्म के बीज-रूप बाप हो। जो सक्रिय विरोधी बन जाते, उनमें एक का नाम बताओ। (किसी ने कहा-मुसलमान) उन्होंने तो कितने लम्बे समय तक मिल कर भी भारत में राज्य किया। वो कौन हैं जिन्होंने थोड़े समय राज्य किया और भारतीयों की जबरदस्त धुनाई-पिटाई-मारा-मारी भी कर दी? (किसी ने कहा-क्रिश्चियन्स) हाँ! ये जो अभी तक सारी बातें बोलीं, वो सारी बातें मेन-2 जहाँ जाना चाहते हैं; कौन जाना चाहते हैं? अरे! कौन जाना चाहते हैं। बच्ची को तो बाबा के पास आना है, गुलज़ार दादी लुंजुम-पुंजुम हो गई, अब किसको जाना है? मेन-2 शहरों तक, मेन-2 देशों तक किसको जाना है? (किसी ने कहा-जनक) मेन-2 जहाँ चाहते हैं, जो भी हैं, जिस सेण्टर पर भी हैं और जो अभी अभियान निकला है। बता रहे हैं आगे, क्या अभियान निकला है।

जो अभी अभियान निकला है, जिस अभियान का पूरे विश्व में चक्कर लगने वाला है। पता है कौन-सा अभियान? उस अभियान का पूरे विश्व में चक्कर लगने वाला है। जो अभियान सभी युवाएँ मिल करके बाबा को प्रत्यक्ष करने वाले हैं। युवाओं को क्या खास बात हो गई? युवाओं में ज़्यादा गिनती किसकी होती है- अधरकुमारों की, कुमारियों की, अधरकुमारियों की या कुमारों की? (किसी ने कहा-कुमारों की) जो सभी युवाएँ मिल करके, एक-दो नहीं; सभी युवाएँ मिल करके बाबा को प्रत्यक्ष करने वाले हैं। कौन प्रत्यक्ष करने वाले हैं? (किसी ने कहा-युवाएँ) जो बाप की प्रत्यक्षता कोई भी नहीं कर सका, वो काम कौन करने वाले हैं? युवाएँ प्रत्यक्ष करने वाले हैं। ये एक लास्ट संदेश है। ये अभियान एक लास्ट संदेश है। इसके बाद कोई संदेश नहीं होगा। यही अभियान, जो भी है, अभियान का प्लैन जिसकी भी बुद्धि में आया है और जिसने भी बनाया है, वो बाप की प्रत्यक्षता के अभियान का प्लान उसने नहीं बनाया है। 'उसने' माना तुममें से किसी ने नहीं, इसने नहीं, इसके फॉलोअर्स ने नहीं, 'उसने' बनाया है। नहीं समझा! उसने माने किसने? अरे, एडवांस ब्राह्मणों की दुनिया के अर्धविनाश में भी बनाया था, एडवांस में अर्धविनाश विनाश हुआ था? (किसी ने कहा- हाँ, हुआ था) उस समय (सन् 1998 के आदि में) भी उसी ने बनाया था। ब्रह्मा बाबा ने तो सिर्फ़ इशारा दिया, क्लैरिफिकेशन नहीं दिया। तो जिसकी बुद्धि में भी ये प्लैन आया है और जिसने भी यह प्लान

बनाया है; कौन-सा प्लान? बाप की प्रत्यक्षता का अभियान। ये कैसे होती है? अरे! बाप की प्रत्यक्षता कैसे होती है, पता ही नहीं। अरे! वो प्रत्यक्षता के लिए बाप के नाम के साथ भक्तिमार्ग में 'बम-2' लगाया जाता है- हर-2 बम-2। कौन-सा प्रत्यक्षता का प्लान? परमात्म प्रत्यक्षता बॉम्ब। युवाओं ने ही क्यों बनाया? युवाएँ ही मिल करके क्यों बनाएँगे? अरे! कुमारियाँ क्यों नहीं, अधरकुमारियाँ क्यों नहीं? ''कुमार जो चाहे सो कर सकते हैं।'' (अ.वा.21.2.83 पृ.80 अंत) चाहे तो सारी दुनिया का ध्वंस कर सकते हैं और चाहे तो नई दुनिया बना सकते हैं। माना शास्त्रप्रसिद्ध सभी 4 प्रमुख धर्मों के मूल बीज-रूप 4 कुमारों में से ही कोई एक अव्वल नं० कुमार निकलता है, जो नई दुनिया को बनाने का निमित्त बनता है और बाकी 3 कुमार मिल करके ऐसा संगठन बनाते हैं जिससे सारी दुनियाँ का विनाश, कौन-सी दुनिया? अरे! (किसी ने कहा-आसुरी द्वैतवादी दुनिया) हाँ, जो प्लान तो पहले से ही बना हुआ था, शास्त्रों में भी प्रसिद्ध है- ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मणों की रची गई सृष्टि का तीन बार विनाश हुआ। ये आखरी बार है। तो ऐसा कौन-सा अभियान है, जो सारी ब्राह्मणों की सृष्टि का विनाश हो जावेगा? अरे! नहीं समझ में आया? बाप की प्रत्यक्षता का क्या प्लान/क्या अभियान? (किसी ने कहा-आवाज़) आवाज़ सुनाई दे रही है! आवाज़ तो, कितना लम्बा समय हो गया, 80 साल से आवाज़-ही-आवाज़ चली आ रही है। (किसी ने कहा-शरीर नहीं दिखाई दे रहा है) अरे! दुनिया वालों को कहाँ शरीर दिखाई दे रहा है? (किसी ने कहा-ज्योतिबिन्दु को प्रत्यक्ष करेंगे) वो तो सन् 2000/2001 के आस-पास भी बोला था- दुनिया वाले समझते हैं बाप गुप्त हो गए और बाप कहते हैं- मैं बच्चों के आगे सदा प्रत्यक्ष हूँ। ''जैसे बाप विचित्र है, विचित्र बाप की लीला भी विचित्र है। दुनिया वाले समझते हैं बाप चले गए और बाप बच्चों से विचित्र रूप में जब चाहें तब मिलन मना सकते हैं। दुनिया वालों की आँखों के आगे पर्दा आ गया। वैसे भी स्नेही मिलन पर्दे के अंदर अच्छा होता है।'' (अ०वाणी-18.1.79 पृ०231 आदि) बच्चों के आगे, चच्चों के आगे नहीं। तो कौन-सा प्लान है/कौन-सा अभियान है जो युवाओं द्वारा मिलकर वो अभियान चलने वाला है? नहीं आता है बुद्धि में? (किसी ने कहा-आ गया बुद्धि में, नई दुनिया का) नई दुनिया का? नई दुनिया की स्थापना वो कुमार करेंगे जिनको 24 घंटे आग लगी रहती है, जो बड़े-2 फिलॉसफ़र दुनिया के बताते हैं कि कुमारों के अंदर एक संकल्प और युगल जो अधरकुमार हैं, उनके हज़ार संकल्प; उन हज़ार संकल्पों को एक तुला पर रखो और कुमारों का एक संकल्प दूसरी तुला पर रखो, तो दोनों बराबर हो जाएँगे। कौन-सा संकल्प है? वो कौन-सी आग है जो कुमारों में सबसे जास्ती लगी रहती है? (किसी ने कहा-पता नहीं) अच्छा! कुमार तो कभी कोई रहे ही नहीं, तो कैसे बताएँ! तो उसका नाम दिया है, बड़े-ते-बड़ा बॉम्ब है- परमात्म प्रत्यक्षता बॉम्ब। ये निर्माण का काम करेगा, नई दुनिया निर्माण करेगा या पुरानी दुनिया को ध्वस्त करेगा पहले? (किसी ने कहा-ध्वस्त करेगा) जो सन् 1976 से बेसिक ब्राह्मणों की पुरानी दुनिया हो गई और एडवांस ब्राह्मणों की दुनिया शुरू हुई, जैसे बेसिक ब्राह्मणों की दुनिया पहले 1936/37 से शुरू हुई और 1976 तक 40 वर्ष पूरे हुए, ऐसे ही एडवांस ब्राह्मणों की दुनिया 1976 से शुरू हुई और 2017 तक 40 वर्ष हुए, तो वह भी ध्वस्त होने वाली है। ये अभियान युवाएँ मिलकर करेंगे। बुद्धि में नहीं बैठता? यही अभियान जो भी है, जिसकी भी बुद्धि में ये प्लैन आया है, जिसने भी बनाया है, वो उसने (क्रिश्चियन धर्म के मूल बीज ने) नहीं बनाया है, बाप ने कैच कराया है। वो प्लान उसको बाप ने कैच कराया है कि तुम्हारा मुख्य पार्ट क्या है, तुम किस धर्म के बीज हो। पहले ही/आदि में ही फाउण्डेशन डाल दिया था कि किस धर्म के बीज हो? (किसी ने कहा-सनातन धर्म) कौन-सा धर्म है जो बॉम्ब बनाकर सारी दुनिया का विनाश कराय देता है? (किसी ने कहा-क्रिश्चियन)

उनमें भी वो क्रिश्चियन जो नास्तिक हैं- धर्म को नहीं मानते, धर्मपिता को नहीं मानते, गिरजाघर को नहीं मानते, धर्म-ग्रन्थ को नहीं मानते; अपने सामने किसी को नहीं मानते, बाप को ही नहीं मानते। तो उनको यह प्लान बाप ने कैच कराया है कि तुम्हारा यह मुख्य कर्तव्य है। क्या कर्तव्य है? परमात्म प्रत्यक्षता का बड़े-ते-बड़ा बॉम्ब फोड़ना।

उससे पहले क्या होगा? पहले सारी दुनियाँ ध्वस्त होगी, बाद में बाप भी प्रत्यक्ष होगा। वो प्लान ग्लानि की भयंकर बदबू भरा प्लान है, बॉम्ब जो हैं, वो बेहद में जो बनते हैं, वो ग्लानि के बॉम्ब होते हैं या महिमा के बॉम्ब होते हैं? (किसी ने कहा-ग्लानि के) जो बॉम्ब बच्चे नहीं फोड़ सके, जो ब्रह्मा के बचकानी-बुद्धि कुखवंशावली बच्चे कहे जाते हैं- ब्रह्माकुमार-कुमारी। ग्लानि तो करते हैं, करते रहे; लेकिन वो अभियान कभी सफल नहीं हुआ और यह एडवांस मुखवंशावली युवा कुमार ये अभियान प्रैक्टिकल में सम्पन्न करके दिखाने वाले हैं, जिसमें सारी ब्राह्मणों की दुनिया का विनाश हो जावेगा और उसका नाम है 'बाप का प्रत्यक्षता बॉम्ब'। बाप प्रत्यक्ष हो जावेगा या नष्ट हो जावेगा? (किसी ने कहा-प्रत्यक्ष हो जावेगा) अच्छा, क्योंकि बच्ची के तन में आकर तो बाबा इतना नहीं बोल सकता है, जितना जो तीसरा तन नया तन है, यह जितना नंगा नाच कर सकता है, इतना नंगा नाच बच्ची कैसे करेगी! बच्ची तो नहीं कर सकती है। बच्ची के तन में आकर तो बाबा इतना नहीं बोल सकता, सभा में भी इतना नहीं बोल सकता और हलचल भी नहीं, अचल रहना है, भले बाप की बड़े-ते-बड़ी ग्लानि का बॉम्ब फूट पड़े, जिसमें ज़हर भरा हुआ हो, अचल रहना है। क्यों अचल रहना है? क्योंकि अब कहाँ जाना है? घर जाना है।

सूरज-चाँद-सितारों की दुनिया के पार जाना है! नहीं। कहाँ जाना है? जो मुरली में 20 बार बोला- घर को याद करो, बाप को याद करो, स्वर्ग को याद करो। ''अपने शांतिधाम घर को याद करो, सुखधाम को याद करो। .... सिर्फ एक बाप को याद करना है।'' (मु.ता.2.8.91 पृ.2 अंत) अरे, तीन को याद करें या एक को याद करें? अरे, जो बाप है वो ही हमारा घर है- 'ज्योतिर्लिंगम् शिव'। जिसके लिए 'मन्मनाभव' बोला जाता है। मेरे मन में समा जा, वो शिव निराकार कहता है? उसको मन है? तो कौन कहता है- मन्मनाभव? साकार सो निराकार कहता है, एक ही व्यक्तित्व है, जो आज भी मंदिरों में सबसे जास्ती तादाद में पूजा जाता है, जिसकी सर्वाधिक मूर्तियाँ देश-विदेशों की खुदाइयों में मिली हैं, इसलिए वही सार्वभौम है, वो कहता है 'मन्मनाभव' अर्थात् मेरे मन में समा जा। मेरा मन जड़ है या चैतन्य है; जड़त्व बुद्धि वाला है या चैतन्य बुद्धि है? (किसी ने कहा-चैतन्य बुद्धि) नहीं। मन ब्रह्मा है ना! हाँ, जड़त्व बुद्धि भले है; लेकिन तुरिया है। तो उस सहनशीलता की प्रतिमूर्ति में समा जा। अब घर जाना है। हे आत्माओं! वह बेहद की माता ही तुम्हारा घर है। दुनिया में, परिवार में जो भी बच्चे पैदा होते हैं, वो कौन-से घर से आते हैं? उनका कौन-सा घर है? कोई भी मनुष्य-आत्मा शरीर छोड़ती है, कोई भी प्राणी शरीर छोड़ता है तो कहाँ, कौन-से घर में जाता है? माता के गर्भ में जाता है ना! ओम् शांति।